



॥ ओ३म् ॥

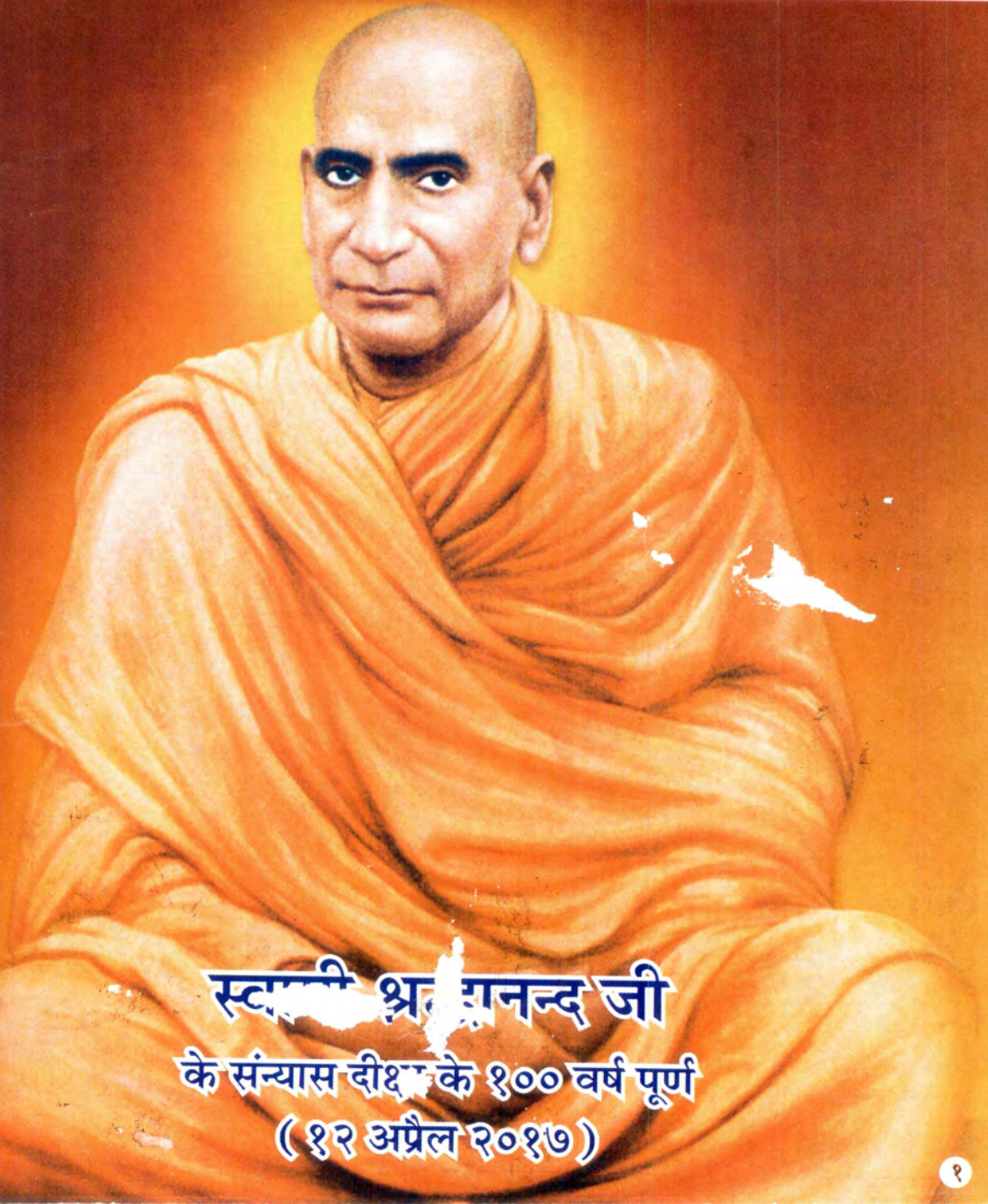
पाक्षिक

परोपकारी

• वर्ष ५९ • अंक ७ • मूल्य ₹१५

महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र

• अप्रैल (प्रथम) २०१७



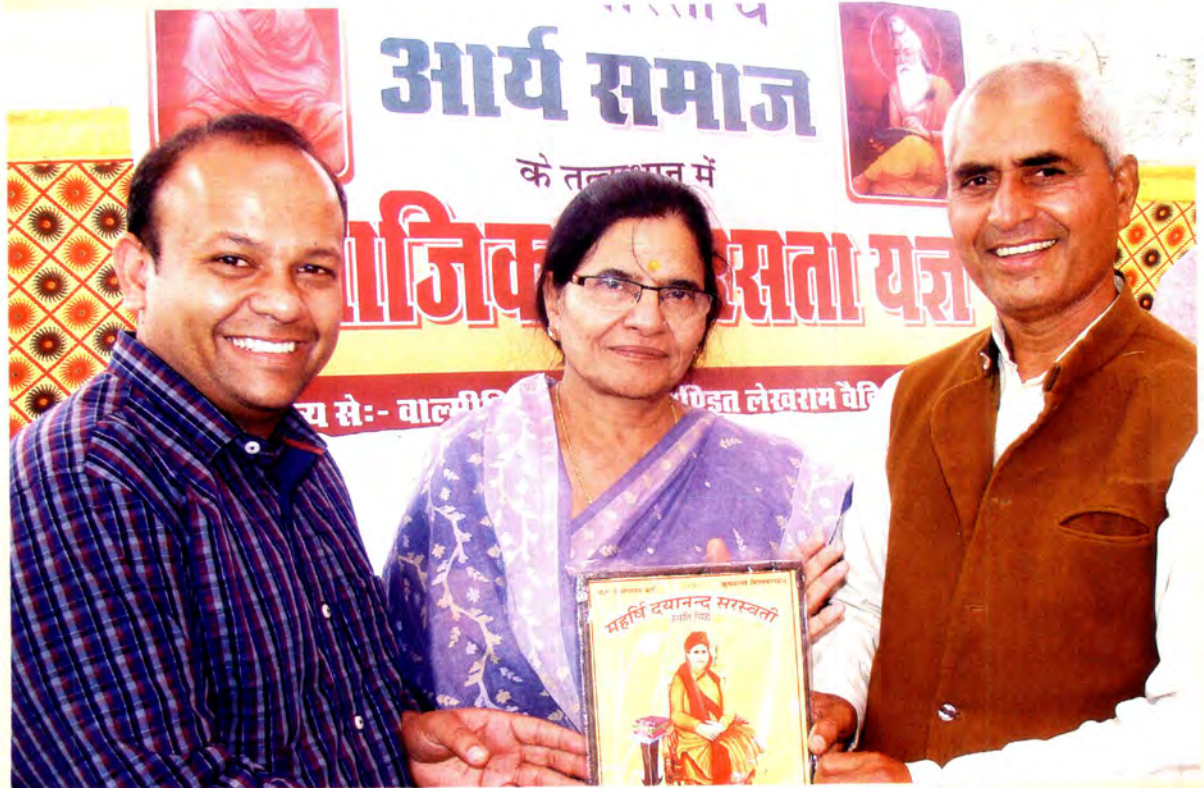
स्वामी श्री दयानन्द जी

के संन्यास दीक्षा के १०० वर्ष पूर्ण
(१२ अप्रैल २०१७)



श्री रामप्रकाश आर्य

श्री गौरव आर्य



श्री लक्ष्मण 'जिज्ञासु'

श्री रामनिवास 'गुणग्राहक'

सामाजिक समरसता कार्यक्रम के आयोजकों को सम्मानित करती हुई परोपकारिणी
सभा की अंतरंग सदस्य श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर'

**महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र**

वर्ष : ५९ अंक : ०७

दयानन्दाब्द : १९३

विक्रम संवत् : चैत्र शुक्ल २०७४

कलि संवत् : ५११८

सृष्टि संवत् : १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तैवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., द्विवार्षिक-३९० रु.,

त्रिवार्षिक-५८० रु.,

आजीवन-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डालर

द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डा.,

त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डा.,

आजीवन-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डालर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०



विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः॥

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अप्रैल प्रथम २०१७

अनुक्रम

०१. लोकतन्त्र की जीत	सम्पादकीय	०४
०२. छः दर्शनों की वेद मूलकता	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
०४. सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार की भव्य योजना		१७
०५. जिज्ञासा समाधान-१३०	आचार्य सोमदेव	१८
०६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२०
०७. ऋषि दयानन्द की कल्पना के यज्ञ... स्वामी सत्यप्रकाश		२१
०८. सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते	आचार्य उदयवीर	२५
०९. संस्था-समाचार	लेखराम आर्य	३०
१०. सामाजिक समरसता महायज्ञ.....	डॉ. किशोर काबरा	३५
११. सच्चे-राम को ईश्वर बताने की.....	पं. आर्य प्रहलाद गिरि	३९
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com

email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -

www.paropkarinisabha.com →

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं हैं। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

लोकतन्त्र की जीत

कोई भी समाज अपने आस-पास घट रही घटनाओं से उदासीन नहीं रह सकता/विशेषकर यदि वे घटनाएँ राजनीति या सरकार से सम्बन्ध रखती हैं। यद्यपि आर्यसमाज एक धार्मिक-सामाजिक संगठन है, परन्तु इसकी 'धर्म' की परिभाषा विशद है, जिसमें मानव जीवन से सम्बन्धित सभी पक्षों का सम्यक् समावेश रहता है। इसी दृष्टि से हमें पिछले दिनों भारत के पाँच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव और उनके परिणामों पर विचार करना उचित होगा।

उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखण्ड, मणिपुर और गोवा में चुनाव सम्पन्न हुए और दो प्रदेशों में (उत्तरप्रदेश और उत्तराखण्ड) भाजपा ने प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रचण्ड विजय प्राप्त की। पंजाब में जो सरकार कैप्टन अमरिन्दर सिंह के नेतृत्व में बनी उसका श्रेय बादल सरकार के भ्रष्टाचार एवं व्यक्तिगत रूप से कैप्टन अमरिन्दर सिंह को ही जाता है। कांग्रेस पार्टी के रूप में वहाँ कोई विशेष प्रभाव नहीं था। शेष दो राज्यों में स्पष्ट बहुमत न होने पर भी भाजपा की सरकार बनी है, क्योंकि कांग्रेस नेतृत्व सक्रिय रहकर निर्णय लेने में अक्षम है। श्री नरेन्द्र मोदी जी के सर्जिकल स्ट्राइक और नोटबन्दी जैसे सफल अभियानों को जनता ने हृदय से स्वीकार किया है।

यह उल्लेखनीय है कि भाजपा ने उत्तर-पूर्व में अपना परचम मणिपुर में फहराकर अपनी जन स्वीकार्यता को स्पष्ट किया है। इस प्रकार कुल मिलाकर भाजपा इन चुनावों में विशेष लाभ की स्थिति में रही। इस समय सिद्ध हुआ कि भाजपा के प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ही विजयी हुए हैं, इसमें दो राय नहीं। हालाँकि भाजपा कार्यकर्ताओं और अपने अन्य संगठनों (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) की बदौलत एक सुगठित पार्टी है। भाजपा को समान विचारधारा के सभी संगठनों का सहयोग भी मिला है।

हमें यह देखना चाहिए कि आखिर क्या बात है कि मोदी जी की स्वीकार्यता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इस विजय में जहाँ अन्य राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों की नेतृत्व-अक्षमता मुख्य कारण बनी, वही राष्ट्रीय समस्याओं को सही परिप्रेक्ष्य में न देख पाना भी कारण रहा। यद्यपि सभी पार्टियाँ विकास का नारा देती दीख रही थीं, परन्तु वे यह बताने में असमर्थ थीं कि मोदी जी स्वयं 'सबका साथ,

सबका विकास' के नारे के साथ इस चुनाव में उतरे थे। जहाँ क्षेत्रीय पार्टियों ने जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता का सहारा लिया, वहीं मोदी जी ने सर्वसमावेशी दृष्टिकोण अपनाए रखा तथा कोई भी विभेदकारी वक्तव्य नहीं दिया है।

प्रधानमंत्री जी के इस दृष्टिकोण की प्रशंसा की जानी चाहिए कि वे एक सच्चे शासक की भाँति सभी वर्गों, धर्मों, समाजों को समान दृष्टि से देखते हैं। लेकिन दिक्कत यह है कि देश के कुछ (धार्मिक, सामाजिक एवं क्षेत्रीय) वर्गों के शासकों की विभेदकारी एवं तुष्टिकरण की नीति का शिकार समाज स्वतन्त्रता के बाद से ही बनता आया है, जिससे उन्हें विशेष पहचान के कारण कुछ अतिरिक्त सुविधाएँ आजादी के बाद से ही प्राप्त होती आई हैं। अतः वे मोदी जी की समानता की विचारधारा को भी अपने लिए हानिकारक समझते हैं। लेकिन उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि उनके शेष देशवासी, जो उन सुविधाओं से वंचित रहते हैं, वे उन्हें अपना विरोधी और शत्रु मानने लगते हैं।

अस्तु, प्रधानमंत्री जी ने विशेषतः उत्तर प्रदेश की बड़ी विजय के पश्चात् अपने सम्बोधन में कहा कि सभी के साथ समानता का बर्ताव करते हुए सभी को साथ लेकर देश का विकास किया जाएगा। इससे हम आशान्वित हैं कि सभी वर्गों, मतों, सम्प्रदायों एवं क्षेत्रों-प्रदेशों को विकास के समान अवसर दिए जाएँगे एवं हार-जीत की निराशा एवं गर्वोन्मत्तता से दूर रहकर राजधर्म का निर्वाह किया जाएगा।

सौभाग्य से प्रधानमंत्री में हम उन गुणों का समावेश पाते हैं, जो ऋषियों की दृष्टि से एक शासक में अनिवार्यतः होने चाहिए— सदाचार, ईमानदारी, कर्मठता, निरालस्य, राष्ट्रप्रेम, अर्थ-शुचिता, सतत अथक परिश्रमशीलता, प्रजा (जनता) के प्रति समदृष्टि इत्यादि। हमें ज्ञात नहीं कि उन्होंने किसी गुरु से आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया अथवा नहीं, परन्तु यदि किया होता तो वे 'राजर्षि' की उपाधि अवश्य प्राप्त करते।

मुखिया मुख सो चाहिए, खान-पान सो एक।

पालड़ पोसड़ सकल अंग तुलसी सहित विवेक॥

— दिनेश

पुस्तक-परिचय

पुस्तक का नाम- क्या है आपके जीवन की सच्चाई?

(एक माँ के पत्रों द्वारा)

लेखिका - सुश्री कञ्चन आर्या

प्रकाशक- दर्शन-योग महाविद्यालय, आर्यावन, रोजडू
सागपुर, जिला- साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

मूल्य- ६०० रु., पृष्ठ संख्या- १९२

जीवन अमूल्य है। इसका मूल्य समझना अति कठिन है, हम इसको कहाँ ले जा रहे हैं-इसका लेशमात्र भी हमें पता नहीं होता। हम क्या थे? क्या होने जा रहे हैं और क्या होंगे?- इस पर भी सहसा ध्यान नहीं जाता है। हम दोष देते हैं आज की शिक्षा को जो सही नहीं है। शिक्षा तो ज्ञानाजन का उत्तम मार्ग है, किन्तु हम ही भटक जाएँ तो दोष किसका है? आज नये-नये आयाम व तकनीक शिक्षा के माध्यम बनते जा रहे हैं। बच्चों को सही मार्ग दर्शन मिले, वे चिन्तन कर किस मार्ग की ओर बढ़े यही पीढ़ी एक माँ के हृदय की है, जो पत्रों के द्वारा बालकों को आदर्श पथ बताने की इच्छुक है, उसी क्रम में पत्र जिज्ञासा-समाधान का रूप सामने रखा है। सभी वर्ग के लिए पत्रों का कलेवर अच्छा लगता है। ऐसा ही दिग्दर्शन आर्याजी के पत्रों में झलकता है, माता, पिता, सगे सम्बन्धी, मित्र आदि को प्रेरणा मिलती है। जीवन में यज्ञ, ईश्वर की प्रार्थना, शिष्टाचार और आज्ञा पालक का अत्यधिक महत्त्व है।

पाश्चात्य संस्कृति अधिक प्रभावी न हो

इस दिखाई देने वाले शरीर और संसार के परे भी क्या कुछ ऐसे पदार्थ विद्यमान हैं, जो दिखाई नहीं देते? यदि हैं, तो वे कैसे हैं? अध्यात्म और धर्म का असली स्वरूप क्या है? और उसकी क्या आवश्यकता है? अपने तथा समाज के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है? मोबाइल में सिम: शरीर में मन व बुद्धि, मोबाइल में बैटरी, शरीर में चेतना, धर्म या कर्तव्य पालन, शारीरिक स्वास्थ्य, समय का सदुपयोग, आत्म निरीक्षण आदि गूढ़ बातों को सरल, सरस एवं रोचक शब्दों में सहज रूप से प्रस्तुत किया है, जिसका सीधा प्रभाव भावी जीवन पर पड़ता है और उसे नए मोड़ देने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षा के साथ सर्वाङ्गीण विकास सभी ओर का हो-इस उद्देश्य से लेखिका ने अपनी लेखनी चलाई है व उसने बच्चों के प्रति ममत्व होने के कारण एवं सही दिशा बोध का मार्ग प्रशस्त किया है। बालकों एवं सभी वर्गों के लिए यह जीवन की सच्चाई जानने का अवसर है, अतः हम अपने जीवन को उत्तम बनायें। दृष्टिकोण में कैसे परिवर्तन लाएँ इसे समझें और सतत प्रयास करें। लेखिका की सोच अनुकूल है, उसी क्रम से विचार भी प्रदान किये हैं। सभी प्रेरित हों। उत्तम जीवन बनाएँ। कम्प्यूटर के अलग-अलग भागों के माध्यम से आज का बालक अपना जीवन सार्थक बना सकता है। -देवमुनि

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया सभा के पते पर अवश्य ही भिजवा दें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख विशेषांक में प्रकाशित किये जा सकें।

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर-३०५००१ (राज.)

छः दर्शनों की वेद मूलकता

— डॉ. धर्मवीर

साहित्य के अन्य क्षेत्रों की भांति भारतीय दर्शनों का भी अनेकधा विद्वानों ने विस्तृत अध्ययन किया है। दर्शन साहित्य को अनेक दृष्टिकोण से जाँचा और परखा है। इसका वर्गीकरण आस्तिक या नास्तिक, वैदिक या अवैदिक, सेश्वर, निरीश्वर अनेक प्रकार से देखने में आता है। इस सबके पश्चात् हमारे इस निबन्ध में ऐसा क्या शेष रहता है, जो आलोच्य हो। दर्शन सम्बन्धी अध्ययन करने पर एक बात बार-बार ध्यान आती रहती है, दर्शनों का अध्ययन करने वालों ने इसे समग्र रूप में देखने का प्रयास कम किया है। अनेक विद्वानों ने दर्शन शास्त्र का अध्ययन करते हुये, इनको पृथक्-पृथक् मानकर इनका अध्ययन व समालोचन किया है। इस कारण इनमें विद्यमान सामंजस्य की अपेक्षा विभेद विरोध में परिवर्तित होता दिखाई पड़ता है, जिसके कारण अनेक सम्प्रदाय परस्पर नीचा दिखाते अपशब्दों का प्रयोग करते दिखाई देते हैं। यह विरोध क्या उचित और वास्तविक है? इसे जाँचने के लिए इनके समग्र रूप का चिन्तन किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से छः भारतीय दर्शनों में क्या परस्पर सामंजस्य है, इस पर इस निबन्ध में विचार किया जायेगा।

समग्र अध्ययन की आवश्यकता- विरोध की विद्यमानता में एकरूपता की खोज क्यों आवश्यक है, यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है। दर्शन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष वस्तुओं का विवेचन कर यथार्थ का बोध कराने में सहायक होता है। इसलिए सभी दर्शनों में विरोध स्वाभाविक है, तो उनका निर्णय भिन्न-भिन्न होगा, ऐसा निर्णय दर्शन के लक्ष्य को पूरा करने में समर्थ नहीं होगा। विद्वानों के विचार में अनेक प्रकार से वस्तु को परखने की प्रवृत्ति हो सकती है, परन्तु वह विभिन्नता विरोध हो, यह अनिवार्य नहीं है। दर्शनों में विरोध स्वाभाविक इस कारण भी नहीं है, क्योंकि दर्शनों को शास्त्र कहा गया है। इनका दूसरा नाम उपाङ्ग है, जिस प्रकार वेदाङ्ग वेद के अङ्ग होकर वेद के विरोधी नहीं हो सकते, उसी प्रकार वेद के उपाङ्ग वेद के विरोधी नहीं होने चाहिए। यदि विरोध दिखाई दे तो

उसे जानने का यत्न करना चाहिए कि यह विरोध वास्तविक है या कल्पित है। इस विरोध और अविरोध को जाँचने के कई प्रकार हो सकते हैं, उनमें से एक प्रकार है- दर्शनों की वेद के विषय में क्या सम्मति है। इस सम्मति को सब दर्शनों में देखने से विरोध या अविरोध का निश्चय करने में सहायता मिल सकती है।

प्रसिद्ध रूप में छः दर्शन हैं, उनको दो-दो के साथ रखकर देखने की परम्परा है, जिससे प्रतीत होता है कि इनमें परस्पर निकटता है। यथा- सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त। इनकी एकरूपता या परस्पर पूरक होने के लिए ये प्रचलित कथ्य सहायक हो सकते हैं। यद्यपि आज ईश्वर-विचार के कारण सांख्य और योग में कोई साम्य नहीं दिखाई देता, परन्तु डॉ. राधाकृष्णन् का कथन है- 'सांख्य इज्ज द थ्योरी ऑफ योग एण्ड योग इज्ज द प्रेक्टिस ऑफ द सांख्य', यदि इनमें विरोध है तो समानता के इस प्रकार के प्रसंग निश्चय ही विरोध से अधिक होने चाहिए।

इसी प्रकार मीमांसा और वेदान्त विरोधी समझे जाते हैं, परन्तु एक का नाम पूर्व मीमांसा है और दूसरे का नाम उत्तर मीमांसा है, जो दर्शन के लक्ष्य और क्षेत्र को प्रकाशित कर रहे हैं। मीमांसा करना दोनों का लक्ष्य है, परन्तु पूर्व और उत्तर शब्द मीमांसा के क्षेत्र पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डाल रहे हैं। इस प्रकार क्षेत्र भिन्न होने पर भी उनमें विरोध हो, यह अनिवार्य नहीं है। इस प्रकार इन दर्शनों को विरोधी कहने से पूर्व हमको विचार अवश्य कर लेना चाहिए। इसमें विद्वानों के विचार के साथ-साथ दर्शन स्वयं इस पर कैसी दृष्टि रखते हैं, यह जानना उचित है। इसी बात के लिए इस प्रसंग में दर्शनों में वेद सम्बन्धी विचारों का विवेचन किया गया है।

योग दर्शन और वेद- योग दर्शन में वेद की चर्चा अनेक स्थानों पर आई है। स्पष्ट रूप से वेद शब्द नहीं है, परन्तु अन्य प्रकार से वहाँ वेद का ही ग्रहण है, इसे व्याख्याकारों ने भी उसी प्रकार स्वीकार किया है। सर्वप्रथम

योगदर्शन में वृत्तियों के निरूपण प्रसंग में प्रमाणों की विवेचना करते हुए कहा गया है- **प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि।** (१-७) यहाँ आगम शब्द मुख्य रूप से वेद का बोधक है, जैसा कि समस्त आर्ष साहित्य में अधिगृहीत होता है।

इसी प्रकार वैराग्य की विवेचना करते हुए आनुश्रविक शब्द का प्रयोग किया गया है, जो वेद के अर्थ में आता है **अनुश्रवो वेदः-** इस प्रकार लौकिक एवं वैदिक विषयों का योग में निषेधात्मक सम्बन्ध दर्शाया है कि जो सम्बन्ध आत्मा में आसक्ति के भाव बढ़ाते हैं। **दृष्टानुश्रविक विषय वितृष्णस्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम्।** - योग (१-१५)

योगदर्शन के द्वितीय पाद में क्रिया योग को समझाते हुए तप और ईश्वर प्रणिधान के साथ स्वाध्याय का उल्लेख है, जिससे मुख्य रूप से वेद एवं गौण रूप से उपनिषदादि आध्यात्मिक शास्त्रों का ग्रहण होता है। **‘तपः स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानानि क्रियायोगः’** - योगदर्शन (२-१)

इसी प्रकार इसी पाद में योग के आठ अंगों में से नियम की व्याख्या करते हुए फिर से स्वाध्याय शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ वेद है। **‘शौच सन्तोष तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः’** (२-३२)। इसी प्रसंग में स्वाध्याय का लाभ दर्शाते हुए इसे परमात्मा का साक्षात्कार कराने वाला कहा है - **‘स्वाध्यायादिष्टदेवता सम्प्रयोगः’** (२-४४)

योगदर्शन के कैवल्य पाद में सिद्धियों के भेद बतलाते हुए मन्त्रजा सिद्धियों का उल्लेख है। इसकी व्याख्या करते हुए मन्त्र का अर्थ वेद किया है।

इस विवरण से स्पष्ट है कि दर्शन का लक्ष्य ईश्वर होने पर भी उसकी प्राप्ति का साधन वेद है और योगदर्शन का ईश्वर वेद प्रतिपादित ईश्वर से भिन्न नहीं है। इस प्रकार योगदर्शन को वेद का उपाङ्ग कहा जाना उचित प्रतीत होता है।

सांख्य दर्शन और वेद- सांख्य दर्शन को आजकल का पठित व्यक्ति निरीश्वरवादी जानता है। सांख्य ग्रंथ के रूप में ईश्वर कृष्ण विरचित सांख्यकारिका का ही पठन-पाठन होता है। यह स्पष्ट रूप से ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। सांख्य सूत्र को अन्य सूत्र ग्रन्थों की भांति विद्वानों ने प्राचीन स्वीकार किया है। इस विषय में दर्शन

के इस युग के विद्वान् आचार्य उदयवीर शास्त्री के सांख्यदर्शन का इतिहास और सांख्य सिद्धान्त ग्रन्थ महत्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार सांख्य निरीश्वरवादी नहीं है। यह दर्शन वैदिक दर्शन है अतः वेद के सम्बन्ध में दर्शन ने क्या कहा है, प्रस्तुत प्रसंग में इतना ही विवेचन पर्याप्त है। इस विवेचन से स्वतः स्पष्ट होगा कि जिसे वेद मान्य है, उसे वेदोक्त विचार भी मान्य हैं।

जीव के मध्यम परिमाण की सिद्धि करते हुए जीवन में गति किस प्रकार होती है, इसका विवेचन करते हुए कहा गया है- **‘गतिश्रुतिरप्युपाधियोगादाकाशवत्’** (१-५१) यहाँ पर श्रुति द्वारा प्रतिपादित गति का आकाश की भांति जीव में घटित होना बताया है, श्रुति में वेद व उपनिषदों में इसके उदाहरण दर्शाये हैं, यथा- **‘आयोधर्माणि प्रथम’** (अथर्व. ५-१-२)

इसी भांति प्रकृति के उपादानकारण का निरूपण करते हुए कहा है- **तदुत्पत्तिश्रुतेश्च** (सांख्य १-७७) श्रुति में प्रकृति को उपादान कारण कहा गया है।

मुक्तात्मनः प्रशंसोपासा सिद्धस्य वा (सां. १-१५) सृष्टिकर्त्ता परमात्मा की प्रशंसा वेद में सपर्य्य। यजु. ४०-८ तथा पूर्णात् पूर्ण. अथर्व. १०-८-२९ उसमें आगे **सिद्धरूपबोद्धृत्वाद्वाक्यार्थोपदेशः** (सां. १-९८) में ईश्वर से वेद के प्रादुर्भाव की चर्चा है। इसी प्रकार तीसरे अध्याय के **श्रुतिश्च** (सां. ३-८०) वेद के आधार पर विवेक-ज्ञान हो जाने पर जीवन्मुक्त होने की चर्चा है। आगे वैदिक कर्मों के अनुष्ठान की आवश्यकता बतलाते हुए कहा गया है, **मंगलाचरणं शिष्टाचारात् फलदर्शनात् श्रुतितश्चेति** (सां. ५-१) **कुर्वन्नेवेहकर्माणि**। यजुर्वेद (४०-२) में वैदिक कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने के लिए कहा है। **श्रुतिरपि प्रधानकार्यत्वस्य** (सां. ५-१२) में प्रकृति के कार्य को बताने में श्रुति को प्रमाण कहा है। लोक की भांति वेद की भी सार्थकता बताते हुए कहा है- **लोके व्युत्पन्नस्य वेदार्थप्रतीतिः।** (सां. ५-४०) जिस प्रकार लौकिक वाक्यों का अर्थ होता है, उसी प्रकार वेद-वाक्यों का भी अर्थज्ञान होता है। इससे आगे स्पष्ट रूप से वेद के प्रयोजन को इस प्रकार बताया है- **न त्रिभिरपौरुषेयत्वाद् वेदस्य तदर्थस्याप्यतीन्द्रियत्वात्** (सां. ५-४१) और आगे के

सूत्रों में वेद की अपौरुषेयता प्रतिपादित की गई- न पौरुषेयत्वं तत्कर्तुः पुरुषस्याभावात्। (५-४६) वेद को अपौरुषेय के साथ स्वतः प्रमाण भी माना गया है- निजशक्त्याभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्। (सां. ५-५१) वेद ईश्वर की निज शक्ति से अभिव्यक्ति होने से स्वतः प्रमाण है। सांख्यदर्शन का उद्देश्य भी अन्य दर्शन से भिन्न नहीं है, जिस प्रकार योगदर्शन का उद्देश्य समाधि और मोक्ष है, उसी प्रकार सांख्य में भी इसी उद्देश्य का प्रतिपादन किया गया है- समाधिसुषुप्तिमोक्षेषु ब्रह्मरूपता। (सां. ५-११६) अर्थात् समाधि, सुषुप्ति और मोक्ष में ब्रह्म के साथ स्थिति रहती है।

इस प्रकार सांख्य और योग में कहीं भी विरोध की प्रतीति नहीं होती, वेद के सम्बन्ध में भी दोनों दर्शनों के दृष्टिकोण में कोई विरोध नहीं मिलता।

वैशेषिक दर्शन- सांख्य-योग की भांति न्याय-वैशेषिक को भी एक युग्म स्वीकार किया जाता है। अन्य दर्शनों की भांति वैशेषिक दर्शन में वेद विषय की धारणा अन्य दर्शनों से भिन्न या विरोधी नहीं है। दर्शन में धर्म के प्रमाण के लिए वेद को मुख्य कहा गया है- तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् (वै. १-१-३) धर्म का मुख्य प्रतिपादक प्रमाण वेद है। आगे वायु की संज्ञा वैदिक बताते हुए कहा है- तस्मादागमिकम् (वै. २-१-१७) आगे पुनः- तस्मादागमिकः (वै. ३-२-८) में आत्म संज्ञा को वेदोक्त बताया है। अयोनिज शरीरों की चर्चा में वेद को प्रमाण मानते हुए कहा है- वेदलिङ्गाच्च (वै. ४-२-११) अर्थात् वेद प्रमाण से भी उक्त अर्थ की सिद्धि होती है। आगे वैदिकाच्च (वै. ५-२-१०) दर्शनकार वेद को प्रमाण मानते हुए कहता है- बुद्धिपूर्वावाक्यकृतिर्वेदे (वै. ६-१-१) वेद में जो उपदेश किया गया है, वह सब बुद्धिपूर्वक है। बुद्धिपूर्वो ददाति (वै. ६-१-३) वेद द्वारा दान देने का विधान बुद्धिपूर्वक है। दर्शनकार अन्त में कहता है- तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यमिति (वै. १०-२-९) ईश्वर का वचन होने से वेद स्वतः प्रमाण है।

इन सूत्रों में वेद विषय में जो विचार व्यक्त किये हैं, इनसे स्पष्ट प्रतीत होता है। वेद विषय में दर्शन की धारणापूर्वक मान्यता समान प्रतीति होती है। अतः वेद की

मान्यता से किसी भी दर्शन का विरोध नहीं है, अतः दर्शन में भी परस्पर विरोध का प्रतिपादन करना किस प्रकार उचित कहा जा सकता है।

न्याय दर्शन- न्याय दर्शन में अनेक प्रसंग हैं, जिसमें वेद के प्रति आदरभाव दर्शाया गया है। वेद को स्पष्ट रूप से प्रमाण मानते हुए दर्शनकार कहता है- मन्त्रायुर्वेद-प्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्। (न्याय २/१/६९) मन्त्र तथा आयुर्वेद के समान आसोक्त होने से वेद प्रमाण है। आगे शरीर पार्थिव होने में शब्द प्रमाण का कथन करते हुए कहा गया है- श्रुतिप्रामाण्याच्च (न्याय. ३/१/३२) भस्मान्तं शरीरम्- आदि श्रुति के प्रमाण होने से शरीर पार्थिव है। अन्तिम अध्याय में दर्शन का उपसंहार करते हुए- समाधिविशेषाभ्यासात् (न्याय. ४/२/३८) में तत्त्वज्ञान के लिए योगदर्शन की भांति समाधि के अभ्यास का विधान किया गया है और तदर्थं यमनियमाभ्यामात्म-संस्कारो योगाच्चाध्यात्मविध्युपायैः। (न्याय. ४/२/४६) में योग का साधन यम-नियमों का पालन करने का विधान किया है।

इस प्रकार दर्शनों का लक्ष्य भी समान प्रतीत होता है। लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन भी समान हैं। फिर उनके सैद्धान्तिक विरोध की कल्पना करना, इन प्रमाणों की विद्यमानता में उचित प्रतीत नहीं होता।

पूर्व मीमांसा और वेद- मीमांसा दर्शन वेद के शब्द अर्थ सम्बन्ध को नित्य प्रतिपादित करता है यथा (१/१/५) साथ ही वेद के अपौरुषेय और नित्य होने में जितनी बाधक युक्तियाँ हैं, उनका निरसन किया गया है। इस प्रकरण में- वेदांश्चैके सन्निकर्षपुरुषाख्याः। (मीमांसा १/१/२७) कुछ लोग वेदों का रचयिता पुरुषों को बतलाते हैं- इस प्रसंग में इसका खण्डन किया गया है तथा परन्तु श्रुतिसामान्यमात्रम्। (मीमांसा १/१/३१) मन्त्र में आये ऋषि नामों को सामान्य संज्ञा बतलाया है। साथ ही सर्वत्वमाधिकारिकम् (१/२/१६) में सभी का वेदाध्ययन में अधिकार प्रतिपादित किया है। वेद का पाठ मात्र दर्शनकार को अभिप्रेत नहीं है- बुद्धशास्त्रात् (मीमांसा १/२/३३) में वेद के अर्थ सहित पठन-पाठन का विधान किया है। वेद से भिन्न वेद व्याख्या ग्रन्थों को दर्शनकार बाह्य कहता है-

शेषे ब्राह्मणशब्दः (२/१/३३)

मीमांसा दर्शन यज्ञ-कर्मकाण्ड का प्रतिपादक है और वेद को परम प्रमाण स्वीकार करने वाला ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के अधिकांश सूत्र वेद की समस्याओं का समाधान करते हैं। इस प्रकार यह शास्त्र वेद के सम्बन्ध में उत्पन्न अनेक समस्याओं का समाधान करने वाला होने से विभिन्न कार्य का प्रतिपादक प्रतीत होने पर भी अन्य दर्शनों का विरोधी नहीं हो सकता।

उत्तर मीमांसा और वेद- उत्तर मीमांसा नाम के अनुसार यदि पूर्व मीमांसा का वेद से सम्बन्ध है तो उत्तर मीमांसा का वेद से सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। इसका दूसरा नाम इस वेद से साक्षात् सम्बन्ध को प्रतिपादित करता है। वेदान्त नाम बता रहा है कि इस दर्शन का उद्देश्य वेद के रहस्य का प्रतिपादन करना है। इसका प्रत्येक सूत्र रहस्य का प्रतिपादक है। मध्यकाल में वेद को मनुष्यों से दूर करने का प्रयत्न किया गया और इसी दर्शन के आधार पर स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् पंक्ति वेदान्त दर्शन के श्रवणाध्ययनार्थप्रतिषेधात् स्मृतेश्च- १/३/३८ के भाष्य में आचार्य शंकर उद्धृत करते हैं, परन्तु सूत्र स्पष्ट रूप से आचारवान् का वेदाध्ययन में अधिकार और आचारहीन का अनधिकार प्रतिपादित करते हैं। वेद कहता है- **यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।** (यजु. २६/२) और सूत्रकार इसी बात की पुष्टि करते हुए कहता है- **भावं तु बादरायाणोऽस्ति हि।** (वेदान्त १/३/३३)

इसी प्रकार जीवात्मा के परमात्मा के एक देश में अंश साहचर्य के कारण है, इसमें दर्शनकार ने वेद प्रतिपादन

को प्रमाण बतलाते हुए- **मन्त्रवर्णाच्च** (वेदान्त २/३/४४) कहा है।

परमात्मा को जीव के कर्मफलों का प्रदाता प्रतिपादित करते हुए सूत्रकार वेद को प्रमाण रूप में उपस्थित करता है **श्रुतत्वाच्च** (वेदान्त ३/२/३९) **यदङ्गदाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि** (ऋ. १/१/६) **शन्नोऽस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे** (यजु. ३६/८) अन्य दर्शनों की भांति वेदान्त का लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष प्राप्ति है। दूसरे शास्त्रों की भांति योग साधना उसका साधन है। इस विषय में द्रष्टव्य है- **ध्यानाच्च** (वेदान्त ४/१/८) ध्यान से ब्रह्मोपासना होती है। **अचलत्वं चापेक्ष्य** (४/१/९) अचलत्व के बिना ध्यान सम्भव नहीं है और ध्यान के लिए आसन और आसन के लिए अनुकूल स्थान की अपेक्षा है- **यत्रैकाग्रता तत्राविशेषात्** (वेदान्त ४/१/११) जिस स्थान में एकाग्रता हो, उस स्थान में आसन लगाकर ब्रह्मोपासना करें।

इस प्रकार अन्य सभी दर्शनों की भांति वेदान्त भी वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादक शास्त्र सिद्ध होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दर्शनों का पृथक्-पृथक् अध्ययन करके उनको परस्पर विरोधी प्रतिपादित करने की परम्परा किस प्रकार और कब प्रारम्भ हुई, यह विचारणीय है। जब सभी दर्शन वेद को परम प्रमाण मानते हैं तो परस्पर विरोधी होने पर वेद में एकवाक्यता गुण की प्राप्ति सम्भव नहीं है। दर्शनशास्त्र बुद्धिहीन बातों का प्रतिपादक शास्त्र नहीं हो सकता, अतः दर्शनों का विरोध कल्पित और अनावश्यक है।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा दें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १८ से २५ जून, २०१७

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा- सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ—मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुँचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो मौलिक व अप्रकाशित हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं। अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें। लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं। स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

ज्ञान की प्राप्ति कैसे?- श्री पीताम्बर जी रामगढ़ (जैसलमेर निवासी) एक भावनाशील आर्य पुरुष हैं। सफल व्यापारी व कुशल मिशनरी हैं। आपने एक सूझबूझ वाले सज्जन से चलभाष पर मुझे से शंका समाधान करवाया। मैंने उस भाई के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि विस्तार से तड़प-झड़प में उत्तर दूँगा और मिलने पर वार्तालाप करेंगे, उस बन्धु का प्रश्न था कि ज्ञान कहाँ से कैसे प्राप्त होता है?

मैंने कहा वेदानुसार सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ऋषियों की हृदय रूपी गुफा में ज्ञान का प्रकाश किया फिर परम्परा से यह ज्ञान अगली पीढ़ियों तक पहुँचता जाता है। अन्न, जल, वायु, प्रकाश, पेड़, पशु, शरीर सब कुछ भगवान् देता है। इनके उपयोग प्रयोग का ज्ञान भी उसी ने दिया। ज्ञान के बिना सुख के साधनों व सम्पदा को देने का लाभ ही क्या?

वेद में आता है हमें ज्ञानी पवित्र करें। हमें ज्ञानियों व दानियों का संग प्राप्त हो। श्रद्धा से सत्य की (ज्ञान की) प्राप्ति होती है। गीता का कथन है कि श्रद्धा से बढ़कर पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं। कारण? श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है। ज्ञानी ही ज्ञान दे सकता है। यह वेदोपदेश है। मैं या आप वेद से तो आगे नहीं। उस सज्जन पुरुष ने माना कि वेद का वचन ही प्रमाण है। बिना सिखाये कोई कुछ नहीं सीखता। कपड़ा सीना जिसे आता हो, वही हमें अपनी कला का ज्ञान देता है, कृषक कृषि का ज्ञान देता है, वैज्ञानिक विज्ञान का ज्ञान देता है। जो स्वयं कुछ नहीं जानता, वह दूसरे को कुछ सिखाता नहीं देखा गया। जब मनुष्य कुछ ज्ञानी बन जाता है तो फिर जड़-चेतन, नदी-नालों, पेड़-पौधों, फूलों-कलियों, पशु-पक्षियों से भी शिक्षा ग्रहण कर लेता है। वे शिक्षा देते नहीं, यह ले लेता है। मनुष्य जो कुछ जानता है, वह अपनी कला, अपना ज्ञान दूसरे मनुष्यों को दे सकता है, जैसा ऊपर बताया गया है परन्तु, सर्कस का सिंह, हाथी, बकरा, बैल या पिंजरे का तोता कितना भी प्रशिक्षित कर दिया जाय, वह अपनी कला अपने जातीय बन्धुओं को नहीं सिखा सकता।

मनुष्य व मनुष्येतर योनियों का यह भेद हमें समझना होगा। सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, ज्ञान, प्रयत्न ये जीव के लक्षण हैं, परन्तु ज्ञान का आदान-प्रदान मनुष्य योनि में ही सम्भव है।

दिसम्बर मास के बलिदान पर्व- कई आर्य सामाजिक पत्रों ने अपने अंकों में दिसम्बर मास में वीर रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाह और भगतसिंह आदि पर हल्के-फुल्के लेख प्रकाशित किये। मैंने इन पर विहंगम दृष्टि डाली। कुछ पढ़ने-लिखने और गहरा सोचने का कष्ट करने वाले लेखक कितने हैं! कुछ बातें कुछ लोगों ने याद कर रखी हैं, वही उगलते रहते हैं। आर्यसमाज प्रत्येक बलिदानी का मान-सम्मान और स्मरण करे। यह तो ठीक है, परन्तु आर्य विचारधारा का प्रसार व धर्मप्रचार तो इन पत्रों का मुख्य उद्देश्य है। आश्चर्य यह देखकर होता है कि किसी भी पत्र में, किसी ने भी वीरवर वेदप्रकाश, वीर शिरोमणि श्यामभाई पर एक भी वाक्य नहीं लिखा। उनका बलिदान भी दिसम्बर में ही हुआ। बलिदान की परम्परा को अखण्ड बनाने वाले दक्षिण के आर्य हुतात्माओं की उपेक्षा एक लज्जाजनक पाप है। राजनीति के क्षेत्र के लिए तो दैनिक पत्र भी हैं। बिस्मिल जी के काकोरी केस के समय पूज्य भाई परमानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी की विलक्षण शूरता को यह लम्बे-लम्बे लेख लिखने वाले जानते ही नहीं। लिखें क्या?

वह शहीद अंक चाहिये:- मैंने आर्य पत्र-पत्रिकाओं के इतिहास, देन व अग्नि-परीक्षा वाले पत्रों तथा सन् १९१५ में 'आर्यमुसाफिर मासिक' के 'शहीद अंक' के शहीद होने (जब्त किये जाने) का उल्लेख किया है। वह अंक अब सर्वथा अप्राप्य है। कुछ अंक तो पत्र के सदस्यों को डाक से मिले ही होंगे? वह ऐतिहासिक अंक मुझे चाहिये। मैंने इसे भाग दौड़ करके खोज तो लिया है, परन्तु अधूरा मिला है। स्वामी श्रद्धानन्द जी (तब महात्मा मुंशीराम) के लेख के कुछ पृष्ठ इसमें नहीं हैं। यह अंक मार्च के आरम्भ में छपा था। क्या कोई इसकी खोज के लिये

भागदौड़ करेगा? इसकी प्राप्ति से आर्यसमाज को विशेष लाभ मिलेगा। क्या सहयोग की आशा की जाये?

मुंशी प्रेमचन्द और आर्यसमाज— मुंशी प्रेमचन्द जी पर लिखने वाले प्रायः सभी साहित्यकारों ने उनके जीवन और विचारों पर आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द की छाप पर एक-दो पृष्ठ तो क्या, एक-दो पैसे भी नहीं लिखे। उन्हें गाँधीवाद व मार्क्स की उपज ही दर्शाया गया है। श्री ओमपाल ने उनके साहित्य पर आर्य विचारधारा की छाप सिद्ध करते हुए पीएच.डी. भी किया है। उनका शोध प्रबन्ध ही नहीं छपा। जब मैंने ऋषि दयानन्द पर लिखी गई उनकी एक श्रेष्ठ कहानी 'आपकी तस्वीर' खोज निकाली और 'आपका चित्र' नाम से उसे अपने सम्पादकीय सहित पुस्तिका रूप में छपवा दिया तो प्रेमचन्द जी के नाम पर सरकारी अनुदानों से लाभ उठाने वाले प्रेमचन्द विशेषज्ञों ने मेरा उपहास उड़ाया। यह फुसफुसाहट मुझे आर्य बन्धुओं से ही पता चली। यहाँ तक कहा गया कि प्रेमचन्द जी ने तो ऐसी कोई कहानी लिखी ही नहीं।

आर्यसमाज से मेरे पक्ष में कोई जोरदार आवाज़ उठाकर ऐसे लोगों की बोलती ही बन्द न की गई। श्री इन्द्रजित् देव, श्री धर्मपाल जी मेरठ अवश्य मेरे पक्ष में थे। जब मैंने 'प्रकाश' में छपी उस कहानी का छायाचित्र तक छपवा दिया। हिन्दू मूर्तिपूजा करता है। आरती उतारता है, उस कहानी का आरम्भ 'सन्ध्या का कमरा' से होता है। राजा को प्रेमचन्द कहते हैं 'तेरे राज्य की सीमा तो मैं एक दौड़ में पार कर सकता हूँ' इस वाक्य को ऋषि जीवन से लिये जाने का प्रमाण दिया तो खलबली सी मच गई। उन्हीं विशेषज्ञों के पत्र आने लगे। मुझसे मेरे द्वारा इसके अनुवाद के प्रकाशन की अनुमति ली गई। आर्य पत्रों विशेष रूप से 'प्रकाश' में छपी उनकी और और कहानियाँ माँगी गई। मेरा नाम लेकर स्वामी सम्पूर्णानन्द जी के पुस्तकालय को देखने के बहाने कुछ सामग्री चुराकर ले गये।

अब फिर मेरे पीछे लगे हैं कि 'प्रकाश' की फाइलों में से आप प्रेमचन्द जी की और कहानियाँ हमें देने की कृपा करें। इन लोगों को आर्यसमाज का गौरव नहीं सुहाता। इनका प्रयोजन कुछ और ही है। इसलिये मैं भी सावधान हो गया। 'प्रताप' में भी मुंशी जी की कहानियाँ छपती रहीं।

मैंने पढ़ी हैं। और लो! अपने निधन से पहले आपने 'कर्मफल' कहानी आर्यसमाज के लोकप्रिय मासिक 'आर्य मुसाफिर' को भेजी। उसके छपने में विलम्ब होता गया। मुंशी जी के निधन के कुछ समय बाद यह 'आर्य मुसाफिर' में छप गई। भले ही किसी और ने इसका हिन्दी अनुवाद छपवा दिया हो, मैं भी चाहता हूँ कि इस कहानी के साथ दो-तीन आर्य विचारधारा की प्रेमचन्द जी की और कहानियों का हिन्दी अनुवाद करके एक साठ पृष्ठ का संग्रह अपने सम्पादकीय सहित प्रकाशित करवा दूँ। मैं स्वयं तो इसे प्रकाशित नहीं करूँगा। 'आपका चित्र' के प्रकाशन का प्रादेशिक भाषाओं में करने का अधिकार भी मुझसे लिया गया परन्तु हुआ कुछ भी नहीं। मिशन की आग और संगठन के तेज के बिना ऐसे कार्य नहीं होते। मैंने तो निःशुल्क सेवा कर दी।

इतिहासज्ञ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा प्रो. जयचन्द्र विद्यालङ्कार— आर्यसमाज में बहुत से व्यक्ति प्रो. जयचन्द्र जी विद्यालङ्कार के नाम की तोता रटन तो लगाते देखे हैं। उनके सम्बन्ध में श्री धर्मेन्द्र जी 'जिज्ञासु' ही प्रामाणिक ज्ञान रखते हैं और मेरे अतिरिक्त इस समय आर्यसमाज में सम्भवतः दूसरा व्यक्ति कोई नहीं मिलेगा, जिसने उनसे कभी बातचीत की हो। एक भले लेखक ने तो उन्हें डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर का प्रोफ़ेसर लिख दिया है। गप्पों से तो प्रामाणिक लेखन की एक लम्बी शृंखला के लेखकों, विद्वानों को जन्म देने वाले आर्यसमाज का गौरव घटता है।

इतिहासज्ञ होने की डींग मारने वालों ने कभी इतिहासकारों में नामी पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का तो नाम तक नहीं लिया, जबकि बड़े-बड़े विधर्मी यथा प्रि. गंगासिंह, प्रि. भाई जोधसिंह उन्हें इतिहास का अद्वितीय विद्वान् और मर्मज्ञ मानते थे। न जाने इन बौने दिमागों को स्वामी जी के व्यक्तित्व से क्या चिढ़ है। क्रान्तिकारियों के गुरु आचार्य उदयवीर जी के साथी प्रो. जयचन्द्र जी श्रद्धेय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज से इतिहास की गुथियाँ सुलझवाने आते रहते थे। लाहौर में भी आते थे और फिर दीनानगर भी अपनी समस्याएँ लेकर आते रहते थे।

एक बार प्राचीन भारत के पुराने नगरों के उस समय के नामों की जानकारी स्वामी जी से माँगी तो आपने उनका

उल्लेख करके 'आर्य' मासिक में एक ठोस लेख दिया। मेरा तात्पर्य यह है कि इतिहासज्ञ जयचन्द्र जी शिष्य भाव से जिनके पूज्य चरणों में आते रहते थे, वह तो श्रद्धेय स्वामी जी को इतिहासज्ञों में शिरोमणि मानते थे और आर्यसमाज में कुछ लोगों ने कभी उनकी विद्वत्ता, प्रामाणिकता व देन पर दो पंक्तियाँ नहीं लिखीं। महाशय कृष्ण जी, पं. चमूपति और आचार्य प्रियव्रत उनके ज्ञान व खोज को नमन करते थे।

प्रसंगवश बता दूँ कि बिना प्राथमिकी (एफ.आई. आर.) के एक लम्बे समय तक मुझ पर गुरुद्वारा सिप्रेट केस चलाया गया। आर्यसमाज के दबाव, महाशय कृष्ण जी और लाला. जगतनारायण जी के लेखों के कारण यह केस सरकार को हटाना पड़ा। इनके साथ-साथ प्रो. जयचन्द्र जी ने इस केस को हटाने में कुछ भूमिका निभाई। वह जानते थे कि जिज्ञासु श्री स्वामी जी का चेला है। मिथ्या दोष लगाकर सरकार केस चलाकर बहुत अन्याय कर रही है। हमारे इन नये-नये कृपालु लेखकों की कृपा से जयचन्द्र जी को भी आर्यसमाज से बेगाना बना दिया गया है। भ्रान्ति-निवारण के लिये यह प्रसंग किसी उत्साही भाई की प्रेरणा से दिया है। किसी को तो प्रेरणा प्राप्त होगी ही।

जाति-पाँति आदि रोग रहेंगे तो:- बिहार में गंगा पार करते कितने तीर्थ यात्री मर गये। भगदड़ में यहाँ-वहाँ मरे। प्रयाग में इतनी शीत में यमुना में, त्रिवेणी में डुबकी लगाने वालों का क्या विधि विधान होता है? अव्यवस्था से प्रतिवर्ष इतने तीर्थ यात्री मर जाते हैं। यह बड़े दुःख की बात है। सरकारें पर्यटन के नाम पर तीर्थ-यात्राओं को, अन्धविश्वास को प्रोत्साहन देती हैं। प्रत्येक नदी का महत्त्व है। गंगा, यमुना, नर्मदा की महिमा गा-गाकर आरती उतारना जड़ पूजा है। यह अन्धविश्वास है। क्या कृष्णा, कावेरी, भीमा नदी का महत्त्व नहीं? नदी में स्नान से मोक्ष लाभ नहीं। गंगा, गायत्री, गौ व तुलसी की तुक मिलाकर धर्म की नई विशेषता गढ़ी गई है। उपनिषदों में, गीता में, मनुस्मृति में इसका उल्लेख है कहीं? लोगों को वेद विमुख करने के लिये यह फ़ार्मूला गढ़ा गया है। अदरक का, नीम का, काली मिर्ची का, गन्ने का, नारियल का, केले का, बादाम व मूंगफली का क्या तुलसी से कम महत्त्व है? वेद में तो सब वनस्पतियों, औषधियों का गुणगान है। हमारे क्षेत्र

में एक संस्था ने हिन्दू धर्म के नाम पर तुलसी के पौधे घरों में लगाने के लिये वितरित किये। आस्था के नाम पर.....।

हिन्दू संगठन का राग छेड़ना तो अच्छा लगता है परन्तु संगठन के, एकता के सूत्र क्या हैं? हिन्दुओं की जाति-पाँति, मन्दिर-प्रवेश की रुकावटें, फलित ज्योतिष, विधवा विवाह का निषेध, बाल-विवाह, मृतक-श्राद्ध आदि कुरीतियों व अंधविश्वासों का आज पर्यन्त किसी हिन्दू संगठन ने खण्डन किया? अस्पृश्यता, जाति बहिष्कार, वेद के पढ़ने से स्त्रियों तथा ब्राह्मणेतर को वञ्चित करने का विरोध हिन्दू संगठन करने वाली किस संस्था ने किया? निर्मल दरबार की किसी ने पोल खोली! जो अन्धविश्वासों का खण्डन करे, वह बुरा। जाति-पाँति तोड़ कर जब तक विवाह करने का आन्दोलन लोकप्रिय नहीं होगा, हिन्दू की रक्षा और संगठन की लहर सफल न होगी।

सामूहिक बलात्कार के समाचार टी.वी. पर सुनकर कलेजा फटता है। इस पाप की निन्दा में कोई लहर देश में दिखाई नहीं देती। आत्महत्या का महारोग बढ़ रहा है। धर्म-प्रचार व व्यवस्था अब धर्माचार्य नहीं कोई और ही रिमोट कन्ट्रोल से..... दुर्भाग्य यही है।

परोपकारिणी सभा की एक देन क्यों भूल गये:- राजस्थान ने अतीत में पं. गणपति शर्मा जी, पूज्य मीमांसक जी आदि कई विभूतियाँ समाज को दीं। स्वामी नित्यानन्द जी महाराज भी वीर भूमि राजस्थान की ही देन थे और पं. गणपति शर्मा जी से तेरह वर्ष बड़े थे। श्री ओम् मुनि जी कहीं से एक दस्तावेज खोज लाये हैं। उसका लाभ पाठकों को आगे चलकर पहुँचाया जावेगा। आज महात्मा नित्यानन्द जी के अत्यन्त शुद्ध, पवित्र और प्रेरक जीवन के कुछ विशेष और विस्तृत प्रसंग देकर पाठकों को तृप्त किया जायेगा। आर्यसमाज के प्रथम देशप्रसिद्ध शीर्षस्थ विद्वान् स्वामी नित्यानन्द ही थे, जिन्होंने पंजाब के एक छोर से मद्रास, हैदराबाद, मैसूर, बड़ौदा आदि दूरस्थ प्रदेशों तक वैदिक धर्म का डंका बजाया था। आपका जन्म सन् १८६० में जालौर (जोधपुर) में हुआ।

छोटी आयु में गृह त्यागकर विद्या प्राप्ति के लिये काशी आदि कई नगरों में कई विद्वानों के पास रहकर ज्ञान

अर्जित किया।

घूम-घूमकर कथा सुनाते रहे। महर्षि दयानन्द जी के अमर बलिदान पर आपका झुकाव एकदम आर्यसमाज की ओर हो गया। श्रीयुत अमरनाथ जी कालिया एक तत्कालीन आर्य लेखक की पठनीय अलभ्य पुस्तक से पता चलता है कि ऋषि के बलिदान के पश्चात् परोपकारिणी सभा के प्रथम उत्सव में स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी के साथ आपने भी सोत्साह भाग लिया था। इस कथन में सन्देह का कोई प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु इसकी पुष्टि में किसी अन्य पत्र-पत्रिकाओं से प्रमाण की सघन खोज की जायेगी।

परोपकारिणी सभा ने इस नररत्न को खींच लिया:-

श्री अमरनाथ जी ने ही यह लिखा है कि परोपकारिणी सभा के प्रथम उत्सव में ही इन दोनों की सभा के तथा आर्यसमाज के नेताओं से बातचीत हुई तो सबको यह जानकर हार्दिक आनन्द हुआ कि दोनों विद्वान् संन्यासी दृढ़ आर्यसमाजी बन गये हैं। उसी समय से आर्यसमाज में प्रविष्ट होकर समर्पण भाव से दोनों वेद-प्रचार करने में सक्रिय हो गये। ऋषि जी के प्रति सभा की यह प्रथम बड़ी श्रद्धाञ्जलि मानी जानी चाहिये। वेद-प्रचार यज्ञ में निश्चय ही यह सभा की प्रथम व श्रेष्ठ आहुति थी।

स्वामी नित्यानन्द जी के जीवन के ऐतिहासिक व अद्भुत प्रसंग लिखने की आवश्यकता है। राजस्थान में तो इस दिशा में किसी ने कुछ किया ही नहीं। दक्षिण के पत्रों में इनकी विद्वत्ता पर स्मरणीय लेख छपे। वीर चिरंजीलाल के पश्चात् धर्म-प्रचार में बन्दी बनाये गये आर्य पुरुष आप ही थे। ऋषि के पश्चात् आपके ब्रह्मचर्य-व्रत की अग्नि-परीक्षा की गौरवपूर्ण घटना फिर कभी दी जायेगी।

इन्हें आर्यसमाज से क्या लेना-देना:- प्रतिवर्ष आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं आर्य स्कूलों, कॉलेजों, डी.ए.वी. विद्यालयों से बीसियों शिक्षक प्रिंसिपल रिटायर होते हैं। सर्विस में रहते हुए समाजों व सभाओं के पदों से चिपक जाते हैं। रिटायर होने पर कभी साप्ताहिक सत्संग में इनको नहीं देखा जाता। ऐसा क्यों? यह चर्चा कहीं एक सम्मेलन में कुछ भाई कर रहे थे। मुझे देखकर पूछा- 'ऐसा क्यों होता है?' मैंने कहा- ऐसे लोग अपने पेट के लिए, प्रतिष्ठा के लिये समाज में घुसते हैं। उनमें मिशन की

अग्नि होती ही नहीं। अम्बाला में एक रामचन्द्र नाम के डी.ए.वी. के हैडमास्टर थे। मथुरा जन्म शताब्दी पर 'आर्य गजट' के विशेषाङ्क में महात्मा हंसराज, पं. भगवद्दत्त आदि के साथ उनका भी लेख छपा था। रिटायर होते ही मृतक-श्राद्ध पर लेख देकर सनातन धर्म के नेता बन गये। प्रिं. बहल प्रादेशिक सभा के प्रधान रहे। रिटायर होकर किसी ने चण्डीगढ़ में उनको आर्यसमाज मन्दिर के पास फटकते नहीं देखा। अब आर्यजगत् में और कुछ हो न हो, महात्मा आनन्द स्वामी जी पर तो सामग्री होती ही है। अध्यापक लोग महात्मा जी पर वही अपनी घिसी-पिटी सामग्री देते रहते हैं। प्रयोजन धर्म प्रचार नहीं, कुछ और है।

वैदिक धर्म पर विधर्मी वार करते रहते हैं। पुस्तक मेले पर ऐसा साहित्य खूब बंटा व बिका। इन मैडमों व प्रिंसिपलों ने कभी उत्तर दिया? श्रद्धाराम पर सरकार ने पुस्तक छापी। उसमें ऋषि पर जमकर प्रहार किया। परोपकारिणी सभा ने झूट से उत्तर छपवा दिया। इन्होंने प्रसार में क्या सहयोग किया। ये तो दर्शनी हुण्डियाँ हैं। महात्मा आनन्द स्वामी जी पर इन्हीं के कहने से मैंने 'आनन्द रसधारा' पुस्तक समय से पहले लिखकर दे दी। श्री अजय जी ने छाप दी। महात्मा आनन्द स्वामी जी के इन दर्शनी भक्तों के लेखों में उस पुस्तक के हृदयस्पर्शी प्रसंग यथा 'चरण स्पर्श प्रतियोगिता' आदि कभी किसी ने पढ़ा क्या?

सभी मौन साध लेते हैं:- श्री लक्ष्मण जी 'जिज्ञासु' आदि कुछ भावनाशील युवकों ने परोपकारिणी सभा को वेद और आर्य हिन्दू जाति के विरुद्ध विधर्मियों की एक घातक पुस्तिका की सूचना दी। सभा ने एक सप्ताह के भीतर ज्ञान-समुद्र पं. शान्तिप्रकाश जी का एक ठोस खोजपूर्ण लेख परोपकारी में देने की व्यवस्था कर दी। आवश्यकता अनुभव की गई तो पुस्तक का उत्तर पुस्तक लिखकर भी दिया जायेगा। मिशन की आग जिन में हो वही ऐसे कार्य कर सकते हैं। विदेशों में भ्रमण करने वाले कथावाचक तो कई हो गये। मेहता जैमिनी, डॉ. बालकृष्ण, पं. अयोध्याप्रसाद, स्वामी विज्ञानानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की परम्परा से एक डॉ. हरिश्चन्द्र ही निकले। जिन में पीड़ होगी वही विरोधियों के उत्तर देंगे। दर्शनी हुण्डियाँ काम

नहीं आयेंगी। इन महाप्रभुओं ने कभी श्याम भाई, पं. नरेन्द्र, देहलवी जी, कुँवर सुखलाल, पं. लेखराम, आर्यमुनि जी पर एक पृष्ठ नहीं लिखा। इनसे क्या आशा करनी?

लाला लाजपतराय की मनोवेदना और उनके ये लेख:- एक स्वाध्याय प्रेमी युवक ने लाला लाजपत राय जी के आर्यसमाज पर चोट करने वाले एक लेख की सूचना देकर उसका समाधान चाहा। दूसरे ने श्री घनश्यामदास बिड़ला के नाम उनके उस पत्र के बारे में पूछा जिसमें लाला जी ने अपने नास्तिक होने की चर्चा की है। मैंने अपने लेखों व पुस्तकों में इनका स्पष्टीकरण दे दिया है। लाला जी पर मेरी पुस्तक में सप्रमाण पढ़ा जा सकता है। जब उनके मित्रों ने, कॉलेज पार्टी ने उनसे द्रोह करके सरकार की उपासना को श्रेयस्कर मान लिया तो लाला जी के घायल हृदय का हिलना, डोलना स्वाभाविक था। उधर महात्मा मुंशीराम की शूरता, अपार प्यार और हुँकार ने उनका हृदय जीत लिया। घायल हृदय को शान्ति मिली। स्वामी जी के बलिदान पर दिल्ली की विराट सभा में बोलते समय उनके नयनों से अश्रुकण टप-टप गिर रहे थे। तब उस केसरी की दहाड़ यह थी, “**श्रद्धानन्द तुम्हारे जीवन पर भी मैंने सदा रश्क (स्पर्धा) किया और मौत पर भी रश्क करता हूँ। भगवान् मुझे भी ऐसी ही मौत दे तो मैं इतना समझूँगा कि मैं तुमसे आगे न बढ़ सका तो पीछे भी न रहा।**”

यह तो है नास्तिकता विषयक उनके उस पत्र का उन्हीं के द्वारा अन्तिम वेला में प्रतिवाद। वह योग भी सीखते रहे। उनके साथ जो छल किया गया, जो अन्याय किया गया, उसकी प्रतिक्रिया में क्रोध में आकर यदा-कदा बहुत कुछ कहा परन्तु पटियाला राजद्रोह अभियोग में वे महात्मा मुंशीराम के साथ आर्यसमाज की रक्षा के लिये खड़े थे। श्रीयुत अमरनाथ कालिया की पुस्तक के प्राक्कथन को पढ़िये, आर्यसमाज के लिये उनके उद्गार क्या हैं? उनकी हुँकार की रंगत पं. लेखराम समान थी। शेष कभी फिर लिखा जायेगा।

वह कथनी को करनी का रूप न दे सके:- मालवीय जी ने पं. दीनदयाल से कहा, “मुझसे विधवाओं का दुःख देखा नहीं जाता।” इस पर उन्होंने कहा- “परन्तु सनातनधर्मी हिन्दू तो विधवा-विवाह नहीं मानेंगे। क्या किया

जाये?” इस पर मालवीय जी बोले, “व्याख्यान देकर एक बार रुला तो मैं दूँगा, सम्भाल आप लें।”

इन दोनों का वार्तालाप सुनकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को बड़ा दुःख हुआ। आपने कहा, “ये लोग जनता में अपना मत कहने का साहस नहीं करते। व्याख्यानों में विधवा-विवाह का विरोध करते हैं।”

मालवीय जी शुद्धि के समर्थक थे परन्तु कभी किसी को शुद्ध करके नहीं दिखाया।

हटावट मिलावट दोनों ही पाप कर्म- धर्मग्रन्थों में मिलावट भी पाप है। हटावट भी निकृष्ट कर्म है। परोपकारिणी सभा के इतिहास लेखक ने ऋषि-जीवन में, ऋषि के सामने जोधपुर में आर्यसमाज स्थापना की मनगढ़न्त कहानी जोड़ दी, दयानन्द आश्रम के लिये उस युग में प्राप्त २४०००/- रुपये की आश्चर्यजनक राशि की घटना की हटावट एक दुःखदायक पाप कर्म है। ऐसे ही सभा द्वारा मौलाना अब्दुल अजीज की शुद्धि व स्वामी नित्यानन्द विश्वेश्वरानन्द जी को आर्यसमाज में सभा ने खींचा। इस हटावट का कारण समझ में नहीं आया। यह भी पाप है।

कहीं से जानकारी मिले तो पता दीजिये:- कर्नल प्रतापसिंह ने अपनी आत्मकथा में ऋषि के जोधपुर आगमन व विषपान पर एक अध्याय तो क्या एक पृष्ठ भी नहीं लिखा। इसी प्रकार उसके जीवन काल में जहाँ-जहाँ से उसका जीवन परिचय (उसी से प्राप्त सामग्री के आधार पर) छपा किसी ने भी ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का कतई उल्लेख नहीं किया। ‘भारत के सपूत’ नाम की पुस्तक इसका प्रमाण है। यदि किसी देशी-विदेशी लेखक की पुस्तक में कर्नल प्रतापसिंह की ऋषि-भक्ति व समाज-प्रेम की कोई घटना दी गई हो तो कृपया उसकी जानकारी दी जाये।

श्री दुर्गासहाय ‘सरूर’:- देश के मूर्धन्य कवि, आर्यसमाज के रत्न श्री दुर्गासहाय सरूर की रचनाओं का संग्रह ‘हृदय की तड़पन’ प्रकाशन आधीन है। वह आर्यसमाजी कैसे बने? यह प्रामाणिक जानकारी और पं. लेखराम पर उनकी मुसद्दस चाहिये। क्या कोई सभा संस्था सहयोग करेगी। उत्तराखण्ड सरकार को भी पत्र तो लिखा है। वह पीलीभीत ज़िला अन्तर्गत जहानाबाद निवासी थे। समाज के मन्त्री रहे। उनके मेरठ निवासकाल व समाज-सेवा की कोई प्रामाणिक घटना भी चाहिये।

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन-चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्व भी एक दिन समाप्त प्रायः हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहा है, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें**। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वर्ष २०१४ से लगातार इन ग्रन्थों का निःशुल्क वितरण किया जा रहा है। प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-१. यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। २. आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। ३. दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? - यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। ४. पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। ५. सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। ६. सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-१. सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में होगा। लागत मूल्य १००/- रुपये प्रति पुस्तक। २. ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग १६४ पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ६०/- रुपये प्रति पुस्तक। ३. महर्षि द्वारा रचित पुस्तक आर्याभिविनय हिन्दी में ६४ पृष्ठ व साईज डिमाई आकार में, लागत मूल्य ३०/- रु. प्रति पुस्तक।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को निःशुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो, जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप बैंक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर दें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

१. बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, डिगगी बाजार, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-10158172715

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-091104000057530

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

जिज्ञासा समाधान - १३०

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- आचार्य सोमदेव जी की सेवा में सादर नमस्ते।

आर्यसमाजी दुनिया के किसी कोने में क्यों न हो। वे भगवान् के लिए हवन ही करते हैं। वेद की आज्ञा के आधार पर हमारे टापू में भी आर्यसमाज की तीन संस्थाएँ हैं, जो यज्ञ हवन बराबर करते आ रहे हैं।

हवन करते समय कहीं-कहीं पहले आचमन करते हैं, अंगस्पर्श और शेष कर्मकाण्ड। कहीं पर देखते हैं कि बिना आचमन किये ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना, शान्तिकरण और अन्य मन्त्र पढ़ने के बाद आचमन करते हैं, अग्न्याधान करते हैं और शेष पश्चात्। उसमें सही कौन है? पहले आचमन, अंगस्पर्श या मन्त्रों को पढ़कर आचमन, अंग स्पर्श बाद में। यह मनमानी तो नहीं है या ऋषि दयानन्द की आज्ञा के आधार पर करते हैं, यह आपकी वाणी के आशीर्वाद से स्पष्टीकरण हो जायेगा, प्रतीक्षा रहेगी। अग्रिम धन्यवाद।

- सोनालाल नेमधारी, मॉरिशस

जिज्ञासा २- माननीय आचार्य जी, सादर नमस्ते।

विनती विशेष, मैं परोपकारी का नियमित पाठक हूँ। 'शंका समाधान' स्तम्भ के माध्यम से बहुत सारी शंकाओं का समाधान हो जाता है, किन्तु अभी तक निम्न शंकाओं का समाधान नहीं मिला है, कृपा कर समाधान करें।

क- ब्रह्म पारायण यज्ञ क्या है तथा उसकी विधि किस प्रकार की है?

ख- यज्ञोपवीत धारण करते समय जिन मन्त्रों का पाठ किया जाता है, उसका दूसरा मन्त्र आधा ही क्यों लिखा तथा पढ़ा जाता है।

ग- आधारवाज्याभागाहुति जब-जब भी यज्ञ में जिस स्थान पर दी जायेगी, तब-तब उसी प्रकार निश्चित दिशाओं में दी जायेगी अथवा केवल यज्ञ के आरम्भ में ही? कृपया स्पष्ट करें।

घ- यज्ञ में आहुति देने के पश्चात् कहीं 'इदं न मम'

बोला जाता है, कहीं नहीं। इसका प्राचीन गृह्य सूत्रादि ग्रन्थों के अनुसार क्या नियम है?

- आर्य प्रकाशवीर भीमसेन, उदगीर, महा.

समाधान १- यज्ञ करने की विधि के अनेक अंग हैं, स्तुति-प्रार्थना-उपासना, आचमन, अंगस्पर्श, जल सिञ्चन आदि। यज्ञ की विधि के अंगों का क्रम क्या हो, यह विधि विधान हमें एकरूप से देखने को नहीं मिलता। मुख्य रूप से आचमन व अंगस्पर्श के विषय में यह अधिक देखने को मिलता है। कहीं कोई आचमन, अंग-स्पर्श, स्तुति-प्रार्थना उपासना आदि मन्त्रों के पहले करता है, तो कहीं कोई बाद में। आर्यसमाज में यज्ञ की विधि में एकरूपता देखने को नहीं मिलती। यदि एकरूपता स्थापित हो जाये तो सर्वोत्तम है, चाहे वह एकरूपता पहले आचमन, अंग-स्पर्श करने में हो, चाहे बाद में। पूरे विश्व में जहाँ भी आर्यसमाज का पुरोहित व्यक्ति यज्ञ करे-करवावे, तो उसी एकरूपता वाली पद्धति से करे-करवावे। ऐसा करने से हमारे संगठन में भी दृढ़ता आयेगी।

यदि आर्य-विद्वान्, आर्य-संस्थाएँ एकत्र होकर यज्ञ विषयक पद्धति को सुनिश्चित कर उसके अनुसार यज्ञ करें तो अधिक शोभनीय होगा।

हमारी दृष्टि से तो जो क्रम महर्षि दयानन्द ने संस्कार-विधि में दिया है, उसी क्रम से यज्ञ-विधि का सम्पादन करना चाहिए। महर्षि ने संस्कार-विधि में आचमन, अंगस्पर्श स्तुति-प्रार्थना-उपासना आदि मन्त्रों के बाद करने को लिखा, सो उनके लिखे अनुसार सभी आर्यजन अनुकरण करें। जहाँ कहीं हमें महर्षि का स्पष्ट लेख उपलब्ध नहीं होता, वहाँ आर्य-विद्वान् इकट्ठा हो, वेदानुकूल पद्धति का निर्माण कर लेवें और उसको स्थापित कर दें और आर्यजनों का कर्तव्य है कि उसका सब पालन करें। अस्तु।

समाधान २- (क) यज्ञ करने को ऋषियों ने हमारे जीवन से जोड़ा। जोड़ने के लिए इसको धार्मिक कृत्य के रूप में रखा। आज वर्तमान में धार्मिक कृत्य के नाम पर

स्वार्थी लोग पाखण्ड करते दिखाई देते मिल जायेंगे, ऐसा करके वे अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। यज्ञ भी धार्मिक कृत्य है, इसमें भी स्वार्थी लोग अपना पाखण्ड जोड़ देते हैं। जैसे यज्ञों के विशेष-विशेष नाम रखना, सर्वमनोकामनापूर्ण यज्ञ, सर्वरोगहरण यज्ञ, अमुक-अमुक बचाओ यज्ञ, वशीकरण यज्ञ, शत्रुविनाशक यज्ञ आदि-आदि। जैसे ये आकर्षक नाम हैं, ऐसा ही ब्रह्मपारायण यज्ञ भी एक है। शास्त्र में ब्रह्मपारायण यज्ञ का वर्णन कहीं पढ़ने-देखने को हमें मिला नहीं, किसी महानुभाव को मिला हो तो हमें भी अवगत कराने की कृपा करें। जब इसका वर्णन ही नहीं मिला तो इसकी विधि भी कैसे बता सकते हैं!

(ख) यज्ञोपवीत धारण करते समय जो दूसरे मन्त्र का पाठ किया जाता है, वह मन्त्र का आधा भाग है। आपका कथन है कि आधा भाग पूरा क्यों नहीं? इसमें हमारा कहना है कि अनेकत्र महर्षि की प्रवृत्ति देखी जाती है कि जितने भाग से प्रयोजन की सिद्धि हो रही है, उतने भाग को महर्षि ले लेते हैं, शेष को छोड़ देते हैं। यहाँ भी ऐसा ही है, इसलिए आधा भाग दिया है।

यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

अर्थात् तू यज्ञोपवीत है, तुझे यज्ञ कार्य के लिए यज्ञोपवीत के रूप में ग्रहण करता हूँ। यहाँ यज्ञोपवीत ग्रहण करना था इसलिए 'उपनह्यामि' तक का भाग ले लिया।

ग्रह्यसूत्र में 'उपनह्यामि' के बाद जो मन्त्र का भाग है वह यज्ञोपवीत विषयक नहीं है, उससे आगे प्रकरण बदल जाता है। वस्त्र, दण्ड आदि ग्रहण करने का प्रकरण प्रारम्भ हो जाता है, इसलिए मन्त्र का जितना भाग आवश्यक था, महर्षि उतने भाग का विनियोग कर लिया, शेष का नहीं।

(ग) 'आधारावाज्याभागाहुति' जब-जब देनी हो, तब-तब सुनिश्चित भाग में ही देनी चाहिए, यही उचित है।

(घ) यज्ञ में आहुति देने के पश्चात् 'इदं न मम' वाक्य कहाँ-कहाँ बोला जाता है और कहाँ नहीं, इसका ज्ञान हमें नहीं है, कहीं पढ़ने को भी नहीं मिला, इसलिए इस विषय में कुछ कह नहीं सकते। हाँ, जैसा महर्षि ने निर्देश किया है, वैसा करते रहें, जब अधिक जानकारी प्राप्त हो जाये तो अधिक किया जा सकता है। अलम्।

पुनरोदय

- देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'

सुन्दर नर तन मन मधुवन को।

प्रभुवर! पुनः पुनः दो हम को॥

सुखकर दीर्घ आयु फिर पायें,

फिर प्राणों का ओज जगायें।

फिर से आत्मबोध अपनायें।

मंगल दृष्टिकोण के धन को।

प्रभुवर! पुनः पुनः दो हम को॥१॥

होवें सक्षम श्रोत्र हमारें,

तज कर जग को प्रेय पुकारें।

फिर से साधन श्रेय सुधारें॥

विज्ञान विमल के दर्पण को।

प्रभुवर! पुनः पुनः दो हम को॥२॥

दुःख दुरित दूर उर करो मधुर,

हो हृदय अहिंसक सर्व सुखर।

हे जटार अनल हे वैश्वानर॥

कर्मठ ललाम नव परपन को।

प्रभुवर! पुनः पुनः दो हम को॥३॥

स्रोत- पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन्पुनः प्राणः,

पुनरात्मामऽआगन्पुनश्चक्षुः पुनः

श्रोत्रमऽआगन्। वैश्वानरोऽअदब्ध

स्तनूपाऽअग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्॥

- (यजु. ४.१५)

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के बिना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

वैदिक पुस्तकालय अजमेर

द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

२. महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार

मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यवर्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम हैं। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

३. 'नवयुग की आहट', महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित:

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या - १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

४. इतिहास की साक्षी: लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - १६

१६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

५. असली महात्मा (हिन्दी)

मूल्य - रु. २००/- पृष्ठ संख्या - २४७

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

६. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आप ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 0008000100067176

IFSC - PUNB0000800

ऋषि दयानन्द की कल्पना के यज्ञ - होतर्यज

- स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

भारतीय स्वातन्त्र्य के अनन्तर का आर्यसमाज कई दृष्टियों से १९४९ से पूर्व के आर्यसमाज से आगे भी है और कई दृष्टियों से यह ऋषि दयानन्द के स्वप्नों से पीछे हटता जा रहा है।

यह आवश्यक है कि इसमें से कतिपय बुद्धिजीवी व्यक्ति प्रति तीसरे या पाँचवें वर्ष स्वयं अपनी स्थिति का सिंहावलोकन कर लिया करें। अपने सामाजिक और व्यक्तिगत निर्देशन के लिए एक 'ब्ल्यू-प्रिन्ट' तैयार कर लिया करें।

आर्यसमाज जीवित और उदात्त संस्था है- अनेक राजनीतिक दल पनपते रहेंगे, मरते रहेंगे, अपना कलेवर बदलते रहेंगे। अनेक बाबा-गुरु-अवतार-भगवान्-माताएँ आती रहेंगी, जाती रहेंगी, पर जो जितना ही स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण के निकट रहेगा, उतना ही आर्यसमाज का महत्त्व बढ़ता जावेगा। हिन्दुओं के अनेक रूप हमारे सामने आर्यसमाज का विरोध करने के लिए आये, पर वे चले नहीं, बदलते गये, क्योंकि ये मूर्तिपूजा, अवतारवाद, रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, वर्गभेदों, देशभेदों, जातिभेदों आदि पर निर्भर थे। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को समझना चाहिए कि वे धरती के पुत्र हैं, सब नदी-नदियाँ उनके लिए एक-सी पवित्र हैं। उनको ईश्वर, ईश्वर के स्वरूप, ईश्वरीय-ज्ञान, ईश्वरीय-व्यवस्था और मानव-मात्र की श्रेष्ठता और समवेत कर्मठता में आस्था है- वे सत्य और ऋत के उपासक हैं। इस स्वरूप का आर्यसमाज सदा जीवित रहेगा। आगे की मानवता न पैगम्बरों पर एक होने वाली है, न धर्म और न सम्प्रदायों पर, न मन्दिरों-मस्जिदों या गिरजों पर, वेद-वेदांगों पर ही एक होगी, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, विकासवान् ज्ञान-विज्ञान के विविध शास्त्र (वेदांग-उपांग) समस्त मानव के एक होंगे। (भारतीय ज्योतिष, चीन देश की केमिस्ट्री, भारतीय रसायन, यूनान की ज्यामिति, इस प्रकार के भौगोलिक शब्द मिट जायेंगे)।

वेद-वेदांग के ऋषि एक होंगे, चाहे आइन्स्टाइन हो, मैक्स प्लांक हो, प्रो. रमन् या रामानुजन् हों, चाहे मैडम

क्यूरी हों- इन ऋषियों के नाम पर सबको गर्व होगा। ये ऋषि जो भी मार्ग-निर्देशन करेंगे, उनके संकेतों पर यज्ञों का निर्माण होगा।

यज्ञेन कल्पन्ताम्। (यजु. अध्याय १८), यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। (यजु. ३१/१६), यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। (१८/२९)- इन वाक्यों के नूतनतम अर्थ हमें धीरे-धीरे समझ में आवेंगे। मैं अभी करनाल (हरियाणा) में अपनी दाहिनी आँख नई करवा के आया हूँ, डॉ. जे.के. पसरीच्चा की यज्ञस्थली में मानो 'चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम्' (यजु. १८/२९) का यज्ञ कराया हो। कुछ मास पूर्व मैंने बम्बई के हिन्दूजा-अस्पताल में प्रोस्टेट-ऑपरेशन द्वारा अपने जीवन की नई आयु प्राप्त की थी (आयुर्यज्ञेन कल्पताम्)। ऋषि दयानन्द की दृष्टि में यह सब यज्ञ है। इन यज्ञों में भाग लेने वाले ही ऋत्विक्, होता, अध्वर्यु हैं। इसी प्रकार के होताओं को दृष्टि में रखकर यजुर्वेद, अध्याय २१ के ४८-५८ मन्त्रों में बार-बार 'दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज' और इससे पूर्व 'पयः सोमः परिमुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज' (मन्त्र २९-४७), यजुर्वेद संहिता में पठित है।

स्वामी दयानन्द की कल्पना के यज्ञ क्या है, यह समझना हो तो यजुर्वेद अध्याय २१ के मन्त्रों के भावार्थ देखिये। ये यज्ञ काष्ठानि में घृत और हव्य डालना नहीं हैं।

मन्त्र २९- येऽस्य संसारस्य मध्ये साधनोपसाधनैः पृथिव्यादिविद्यां जानन्ति, ते सर्वं उत्तमान् पदार्थान् प्राप्नुवन्ति॥

मन्त्र ३०- ये संगन्तारो विद्यासुशिक्षासहितां वाचं प्राप्य पथ्याहारविहारैर्वीर्यं वर्द्धयित्वा पदार्थविज्ञानं प्राप्यैश्वर्यं वर्धयन्ति ते जगद्भूषका भवन्ति॥

मन्त्र ३१- ये निर्लज्जान् दण्डयन्ति प्रशंसनीयान् स्तुवन्ति जलेन सहौषधं सेवन्ते ते बलाऽऽरोग्ये प्राप्यैश्वर्यवन्तो जायन्ते॥

मन्त्र ३२- मनुष्या ब्रह्मचर्येण शरीरात्मबलं विद्वत्सेवया विद्यापुरुषार्थेनैश्वर्यं प्राप्य

पथ्यौषधसेवनाभ्यां रोगान्हृत्वारोग्यमाप्नुयुः ॥

मन्त्र ३३- यदि मनुष्या विद्यासंगतिभ्यां सर्वेभ्यः
पदार्थेभ्य उपकारान् गृह्णीयुस्तर्हि
वाय्वग्निवत्सर्वविद्यासुखानि व्याप्नुयुः ॥

मन्त्र ३४- ये मनुष्याः सर्वदिग्द्वाराणि
सर्वर्तुसुखकराणि गृहाणि निर्मिमीरंस्ते पूर्णसुखं प्राप्नुयुः ।
नैतेषामाभ्युदयिकसुखन्यूनता कदाचिजायेत ॥

मन्त्र ३५- हे मनुष्याः ! यथाहर्निशं सूर्याचन्द्रमसौ
सर्वं प्रकाशयतो रूप-यौवनसम्पन्नाः पत्न्यः पतिं
परिचरन्ति च यथा वा पाकविद्याविद्विद्वान्
पाककर्मोपदिशति तथा सर्वप्रकाशं सर्वपरिचरणं च
कुरुत भोजनपदार्थाश्चोत्तमतया निर्मिमीध्वम् ॥

मन्त्र ३६- हे विद्वांसो यथा सद्वैद्याः स्त्रियः
कार्याणि साधयितुमर्हन्ति प्रयतन्ते यथा वा वैद्या
रोगान्निवार्य शरीरबलं वर्धयन्ति तथा वर्त्तित्वा
सर्वैरानन्दितव्यम् ॥

इसी प्रकार की प्रेरणायें और उद्बोधन अन्य मन्त्रों में
भी हैं (होतर्हज)- मनुष्यैः पुरुषार्थेन लक्ष्मीः प्राप्तव्या
(३८), विद्यया वह्निशान्त्या विद्वांसं पुरुषार्थेन प्रज्ञां
न्यायेन राज्यं च प्राप्यैश्वर्यं वर्द्धयन्ति ते ऐहिकपारमार्थिके
सुखे प्राप्नुवन्ति । (३९), ये.....विद्यां विज्ञाय गवादीन्
पशून् संपाल्य सर्वोपकारं कुर्वन्ति ते
वैद्यवत्प्रजादुःखध्वंसका जायन्ते । (४०), ये
कृषिकरणाद्यायैतान्वृषभान्युञ्जन्ति ते धनधान्ययुक्ता
जायन्ते ॥ (४१)

ऋषि दयानन्द की कल्पना उदात्त समाज के निर्माण
की थी, जिसमें सभी शास्त्रों की विद्यायें विकसित हों,
सभी विषयों के ज्ञाता हों और सभी प्रकार के सर्वोपयोगी
संस्थान हों। उनकी दृष्टि में यजुर्वेद का २१वाँ अध्याय
इन्हीं प्रेरणाओं का स्रोत है। आज आर्यसमाज के यज्ञ और
हमारे याज्ञिक आर्यसमाज को भटका रहे हैं और हमारे
पुरोहित और विद्वान् हमें फिर उस ओर ढकेलने में कटिबद्ध
हैं, जिस ओर से ऋषि हमें बचाना चाहते थे।

महर्षि ने वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज (२१/४८-
५८) मन्त्रों के भावार्थों में भी उदात्त प्रेरणायें दी हैं-

मन्त्र ४८- यथा विदुषी ब्रह्मचारिणी कुमारी स्वार्थ

हृद्यं पतिं प्राप्यानन्दति तथा विद्यासृष्टिपदार्थबोधं प्राप्य
भवद्भिरप्यानन्दितव्यम् ॥

मन्त्र ५०- ये पुरुषार्थिनो मनुष्याः
सूर्यचन्द्रसन्ध्यावन्नियमेन प्रयतन्ते सन्निवेलायां
शयनाऽऽलस्यादिकं विहायेश्वरस्य ध्यानं कुर्वन्ति ते
पुष्कलां श्रियं प्राप्नुवन्ति ॥

मन्त्र ५३- यथा विद्वत्सु विद्वांसौ सद्वैद्यो सत्क्रियया
सर्वानरोगीकृत्य श्रीमतः सम्पादयतो यथा वा विदुषां
वाग्विद्यार्थिनां स्वान्ते प्रज्ञामुन्नयति तथाऽन्यैर्विद्याधने
संचयनीये ॥

मन्त्र ५८- ये मनुष्या ईश्वरनिर्मितानेतन्मन्त्रोक्तयज्ञादीन्
पदार्थान् विद्ययोपयोगाय दधति ते स्विष्टानि सुखानि
लभन्ते ॥

यजुर्वेद के १८वें अध्याय में 'यज्ञेन कल्पताम्' पद
मन्त्र १-१७ और २९ में बराबर प्रयुक्त हैं, जिनमें भी ऋषि
दयानन्द ने यज्ञ के कर्मोदात्त और कर्म-प्रेरक अर्थ दिए हैं-
कर्मकाण्डी अर्थ नहीं। स्वामी दयानन्द की कल्पना का
आर्य परिवार रूढ़ि अर्थों में याज्ञिक नहीं है, जैसा कि हमारे
पुरोहितों, कर्मकाण्डियों और तथाकथित याज्ञिकों ने भटका
रखा है। स्मरण रखना चाहिए कि वेदमन्त्रों से राष्ट्र शब्द
संकलित करके उनसे काष्ठाग्नि में घृतादि की आहुतियाँ
डलवा देना राष्ट्रभृत् यज्ञ नहीं है। जिन मन्त्रों में अक्षि या
चक्षु शब्द प्रयोग हुए हों, उन्हें संकलित करके आहुतियाँ
दिला देना नेत्र-यज्ञ या चक्षु-यज्ञ का उपहास मात्र होगा।

मैं अपने युवकों और बुद्धिजीवियों से आग्रह करूँगा
कि यदि आप मेरी कही हुई बातों में कुछ तथ्य समझते हों,
तो आपको आर्यसमाज के परिवारों में प्रचलित वर्तमान
यज्ञों की कुप्रथा को रोकने के लिए कुछ सक्रिय कदम
उठाने होंगे, नहीं तो कैन्सर की तरह बढ़ता हुआ यह
कर्मकाण्ड हमें मध्यकालीन हिन्दुओं की तरह ही विकृत
और पथभ्रष्ट कर देगा। आर्यसमाज में यज्ञ के रूप में फैला
हुआ यह कैन्सर चालीस-पचास वर्ष ही पुराना है, अभी तो
हम इसकी रोकथाम कर सकते हैं, अन्यथा आगे रोकना
कठिन होगा।

मेरी आयु ८५ वर्ष है, आगे की बात ईश्वर जाने,
इसीलिए कुछ तीखे उपाय बता रहा हूँ, हो सकता है कि

मेरे मित्रों को और आर्यसमाज के वर्तमान कर्णधारों को शायद ये पसन्द न आवें। कुछ उपाय ये हैं—

१. विद्वान् युवकों को चाहिए कि वर्तमान यज्ञों के विरुद्ध उचित वातावरण तैयार करें (प्यार और स्नेह से)

२. जहाँ-कहाँ भी ये कैन्सर-यज्ञ हों, उनका सक्रिय विरोध करें।

३. स्वामी दयानन्द ने दो ग्रन्थ हमें व्यावहारिक महत्त्व के दिए हैं— पंचमहायज्ञविधि और संस्कारविधि। संस्कारविधि का सामान्य प्रकरण केवल १६ संस्कारों और नवशस्येष्टि-संवत्सरेष्टि एवं शालानिर्माण विधि के लिए है। कर्मकाण्ड एवं विनियोगों को यहीं तक सीमित रखें।

४. भारतवर्ष में कैन्सर-यज्ञ चलने लगे हैं और इनकी छूत देश के बाहर भी फैलने लगी है। हमें चाहिए कि वह हवा देश के बाहर न जावे।

(मैं वेदपारायण यज्ञ और मृत्युञ्जय यज्ञों को कैन्सर-यज्ञ कहता हूँ।)

५. लोगों को बतावें कि जो हम विद्या-संस्थाएँ खोलते हैं (चाहे गुरुकुल शैली की या कॉलेज शैली की) ये संस्थाएँ ही हमारी यज्ञस्थली हैं, हमारे सभी चिकित्सालय, अनाथाश्रम, सेवागृह, फैक्टरियाँ, पशुधन-विस्तारशालाएँ—इन सबको आर्यसमाज यज्ञ मानता है। दीनदुःखियों की सहायता के लिए, दुर्भिक्ष-पीड़ितों और बाढ़ से सन्तप्त

व्यक्तियों की सहायता के लिए जो भी कुछ हम करेंगे, वह सब यज्ञ है।

आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग में लाला मुन्शीराम, लाला लाजपतराय, लाला हंसराज आदि मनीषियों ने ऐसा ही किया था। वे हमारे महान् याज्ञिक थे, कर्मयोगी थे। आज हम कर्मयोगी नहीं कर्मकाण्डी पैदा कर रहे हैं। मिशनरी नहीं, पुरोहित मण्डली तैयार कर रहे हैं।

युवकों से मेरा आग्रह है कि जहाँ-कहाँ भी कर्मकाण्डियों द्वारा वेदपारायण यज्ञ होता देखें, मृत्युञ्जय-यज्ञ देखें, वर्षा के निमित्त यज्ञ करते-कराते देखें, उनके विरुद्ध सक्रिय विरोध और रोप प्रकट करें।

महर्षि दयानन्द का जन्म १८२४ ई. में हुआ था। उनकी द्वितीय जन्मशती २०२४ ई. में मनाई जायेगी। तब तक हमें अपने कैन्सर-यज्ञों को दूर कर देना चाहिए। अगली शती के लिए वर्तमान आर्यसमाज के सामने जीता-जागता गौरवमय कार्यक्रम होना चाहिए। केवल नारे, लंगर और जलूसों से काम न चलेगा।

मूर्तिपूजा अवैदिक होने पर भी हमारे देश से दूर क्यों नहीं हुई, क्योंकि यह पण्डितों, पुरोहितों, शंकराचार्यों और महन्तों की जीविका बन गई है। आर्यसमाज के कर्मकाण्डी यज्ञ भी जीविका के साधन बन गये, तो आप आगे इन्हें बन्द न कर सकेंगे।

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में

बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु

संभाग स्तरीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १४ मई २०१७ रविवार से २१ मई २०१७ रविवार तक

एवं

आर्य वीरांगना शिविर

दिनांक : २८ मई २०१७ रविवार से ०४ जून २०१७ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०, ८८२३९४५९५६

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जो चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA, AJMER)

१. बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-10158172715

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-आई.डी.बी.आइ, पावर हाउस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक आचार्य धर्मवीर के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक स्वामी विष्वङ्ग के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक आचार्य सत्यजित् के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यो को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केवल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते

— आचार्य उदयवीर शास्त्री

विद्या-अविद्या और सम्भूति-असम्भूति पदों के माध्यम से यजुर्वेद के ४०वें अध्याय एवं तदनुरूप ईशावास्य उपनिषद् में आध्यात्मिकता का विशद विवेचन हुआ है। १२, १३ मन्त्रों में सम्भूति-असम्भूति अथवा सम्भव-असम्भव पदों का प्रयोग हुआ है, परन्तु १४ मन्त्र में 'असम्भूति' पद का प्रयोग न कर, उसके स्थान पर 'विनाश' पद का प्रयोग हुआ है। 'सम्भूति' का अर्थ है, उत्पन्न हुआ पदार्थ। इसके विपरीत 'असम्भूति' का अर्थ है- न उत्पन्न हुआ पदार्थ। अर्थात् समस्त भौतिक-अभौतिक जगत् का मूल उपादान कारण तत्त्व, जो कभी उत्पन्न नहीं होता, न उसका सर्वथा विनाश होता है। पर वह महत्-अहंकार आदि रूप से यथाक्रम परिणत होता रहता है। इस प्रकार उसका यह परिणाम-प्रवाह अनादि अनन्त है।

उसी 'असम्भूति' शब्द को मन्त्र १४ में 'विनाश' पद से कहा। विनाश पद का अर्थ है-

वि-विविधानिवस्तूनि अनेकानेक जगद्रूपाणि,
नश्यन्ति-अदर्शनतां यान्ति यस्मिन् स विनाशः प्रधानमित्यर्थः।

मूल उपादान तत्त्व के लिये अधिक व्यवहृत दो पद हैं- प्रकृति और प्रधान। सर्ग अर्थात् रचना की भावना को अभिव्यक्त करने की दिशा में विशेष रूप से 'प्रकृति' पद का प्रयोग होता है। रचना से भिन्न प्रलय भावना अभिव्यक्त करने में 'प्रधान' पद का। प्रस्तुत मन्त्र में इसी भावना से प्रधान पर्याय 'विनाश' पद का प्रयोग हुआ है।

प्रकृति से परिणत-महत् से लगाकर समस्त प्राकृतिक जगत् सम्भूति है। इसकी चरम परिणति 'मानवदेह' है। मानव-देह का यह विशेष उत्तर है, इसे शेष समग्र सम्भूति समुदाय में से छोट कर अलग कर लिया गया है।

जब हम यह कहते हैं कि वे घोर अन्धकार में पड़ते हैं, जो प्रकृति की उपासना करते हैं तथा वे और भी अधिक घोर अन्धकार में पड़ते हैं, जो 'सम्भूति' में रमण करते हैं। यहाँ 'सम्भूति' पद अपनी विशेषता को लेकर मुख्य रूप में 'मानवदेह' के लिये प्रयुक्त हुआ है। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि असम्भूति के साथ 'उपासते' क्रियापद दिया है। यहाँ मानव-देह के अतिरिक्त शेष समग्र सम्भूति भी उपास्य रूप में असम्भूति के अन्तर्गत है।

परोपकारी

इनकी उपासना से मृत्यु अर्थात् संसार में होने वाले शीत-ताप, भूख-प्यास, आघात-विघात, यातायात आदि दुःखों से पार पाया जा सकता है। यह भी भूलना नहीं चाहिये कि असम्भूति की उपासना भी मानव-देह के माध्यम से ही सम्भव है। इसलिये जो सम्भूति में रमण करते हैं, अर्थात् मानव-देह के साज-शृंगार मात्र में लगे रहते हैं, 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' के उसूलों पर ही अमल करते हैं, मानव-देह का सदुपयोग नहीं करते, वे और अधिक घोर अन्धकार में पड़ेंगे ही, क्योंकि न वे मानव-देह से असम्भूति की उपासना करते हैं, न मानव-देह माध्यम से अध्यात्ममार्गीय अनुष्ठानों का आचरण करते हैं। इसलिये अधिभूत एवं अध्यात्म दोनों प्रकार के लाभों से वञ्चित रह जाते हैं। यही स्थिति उनके घोरतर-घोरतम अन्धकार में पड़े रहने की है। फलतः प्रस्तुत प्रसंग में- प्रकृति परिणत पदार्थों के सम्भूति पद से ग्राह्य होने पर भी प्रकृति की चरम-परिणति 'मानव-देह' ही सम्भूति-पद वाच्य समझना चाहिये। इसी तथ्य को लक्ष्य कर कहा है- सम्भूत्या अमृतमश्नुते। सम्भूति से अर्थात् मानवदेह रूप माध्यम से अध्यात्म ज्ञान प्राप्त कर योगाङ्गानुष्ठान द्वारा आत्म-साक्षात्कार से अमृत-मोक्ष की प्राप्ति होती है। प्रस्तुत प्रसंग में विद्या-अविद्या आदि यह पारिभाषिक जैसे हैं। व्याख्याकारों ने विद्या का अर्थ ज्ञान-काण्ड और अविद्या का अर्थ यज्ञ-याग आदि कर्मकाण्ड किया है। वस्तुतः विद्या पद अध्यात्म विषयक जानकारी को कहता है। तात्पर्य है- आत्म-तत्त्व का साक्षात्कार, यही अमृत प्राप्ति का एकमात्र साधन है और वह मानवदेह (सम्भूति) रूप साधन द्वारा ही प्राप्त होता है, उससे अतिरिक्त अन्य कोई माध्यम या साधन उसका सम्भव नहीं। इस प्रकार विद्या या सम्भूति इनको मिलाकर ही अर्थ करने से उक्त मन्त्रों का प्रतिपाद्य पूर्ण होता है।

अविद्या का अर्थ है, विद्या से विपरीत। विद्या यदि अध्यात्म ज्ञान है, जो अधिभूत ज्ञान अविद्या है। प्रकृति और प्रकृति से परिणत पदार्थों का अन्तिम स्तर तक प्राप्त ज्ञान, जिसे आधिभौतिक विज्ञान कहा जाता है और जो आज प्रायः अपने चरम उत्कर्ष पर है, सब अविद्या की कोटि में

चैत्र शुक्ल २०७४। अप्रैल (प्रथम) २०१७

२५

आता है।

मन्त्रों में बताया 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा' 'विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा' अविद्या से मृत्यु को पार करके तथा विनाश से मृत्यु को पार करके। तात्पर्य हुआ- अविद्या अथवा विनाश से मृत्यु को पार किया जा सकता है अर्थात् मृत्यु से पार पाने का साधन अविद्या अथवा विनाश है। गत पंक्तियों में स्पष्ट किया गया है कि प्रस्तुत प्रसंग में विनाश पद का प्रयोग समस्त जगत् में मूल उपादान कारण त्रिगुणात्मक प्रधान के लिये है। प्रकृति और प्रकृति से परिणत पदार्थों की यथावत् जानकारी और उसके अनुसार उनका यथावत् उपयोग करना ही भौतिक विज्ञान है। इसी को यहाँ 'अविद्या' पद से कहा है। अविद्या या विनाश से मृत्यु को पार कैसे किया जा सकता है? इसे समझने के लिये यह जान लेना आवश्यक होगा कि प्रस्तुत प्रसंग में 'मृत्यु' पद का तात्पर्य क्या है? इसका लोक प्रसिद्ध अर्थ है- आत्मा का देह से वियोग हो जाना। उस अवस्था में आत्मा कोई कार्य कर नहीं पाता। उसे किसी भी प्रकार का कार्य करने के लिये देह धारण करना आवश्यक है। परन्तु मानव जीवन देह धारण किये हुए भी कभी ऐसी स्थितियाँ उसके सामने आ जाती हैं कि उनसे बाधित होकर मानव का जीवन जीवन नहीं रह जाता, वह मरण प्रायः हो जाता है, कुछ भी करने के लिये अपने आपको असमर्थ पाता है, वे स्थितियाँ कौन-सी हैं? संसार का अनुभव बताता है, वे स्थितियाँ हैं- ताप त्रय। ताप त्रय से त्रस्त मानव जीवन के रस को खो बैठता है। सभी दार्शनिक आचार्यों ने ताप त्रय को विस्तार से स्पष्ट करने और उनसे बचने के उपायों को जानने के लिये मानव को प्रेरित किया है। वे ताप त्रय क्या हैं? संक्षेप में पढ़िये-

'ताप' का अर्थ- दुःख, तपाने वाले या दुःखाने वाले जितने प्रसंग संसार में आते हैं, आचार्यों ने उन सबका समावेश तीन वर्गों में कर दिया है १. आध्यात्मिक, २. आधिभौतिक, ३. आधिदैविक।

१. आध्यात्मिक ताप- दो प्रकार का है- १. दैहिक, २. मानस

पहला है देह में वात, पित्त, कफ आदि के विकार तथा अन्य विविध कारणों से देह में रोग व्याधियों का उत्पन्न होना। दूसरा है- काम, क्रोध, राग, द्वेष, मोह आदि

मानसिक विकारों से जनित दुःख। इनको दूर करने के उपाय हैं- आयुर्वेदादि पद्धति से चिकित्सा, संयत जीवन, नियमित एवं व्यवस्थित आहार-विहार, व्यवस्थित दिनचर्या, ऋतु अनुसार अपेक्षित व्यायाम आदि। उन सब उपायों की जानकारी अविद्या क्षेत्र के अन्तर्गत आती है। अविद्या का अर्थ अज्ञान नहीं है।

२. आधिभौतिक ताप- वे हैं, जो अन्य प्राणियों द्वारा प्राप्त होते हैं। सांप, बिच्छू, तैया, मक्खी, मच्छर आदि से होने वाले दुःख इसी के अन्तर्गत हैं। बैल ने सींग मार दिया, गाय ने लात मार दी, घोड़े के खुर से पैर दब गया, आदि दुःख भी इसी में आते हैं। किसी ने थपड़ मारा, गाली दी, लाठी मारी, छुरा घोंपा, गोली चलाई आदि से होने वाले ताप भी इसी बीच हैं। छोटे-बड़े राष्ट्रों में युद्ध होते हैं, जिनसे अनेक प्रकार के दुःख राष्ट्र के सामने आते हैं, उन सबका समावेश इसी वर्ग में है। इन सभी मार्गों से प्राप्त दुःखों के निराकरण व प्रतिरोध करने के उपाय आधिभौतिक विषयक जानकारी प्रस्तुत करती है, इस प्रकार के किसी भी स्तर का कोई ऐसा दुःख नहीं है, जिसको दूर करने का उपाय भौतिक जानकारी ने न सुझाया हो।

३. आधिदैविक ताप- वे हैं, जो आकस्मिक या नियमित दैवीय घटनाओं से प्राप्त होते हैं। सब जानते हैं, जेट की दुःखभरी गर्मी बढ़ जाने तथा पूस-माह में ठण्ड बढ़ जाने से वे दिन दुःखद होते हैं। अचानक नदी में बाढ़ आ जाने, भूकम्प होने, सार्वत्रिक रोग आदि फैल जाने से तथा तटवर्ती समुद्रों में तूफान आ जाने एवं विद्युत्पात आदि से जो दुःख होते हैं, वे सब इसी वर्ग के अन्तर्गत हैं।

दैवी घटनाओं पर मानव बहुत सीमित नियन्त्रण कर पाया है, फिर भी यथामति यथाशक्ति उपाय किये जाते हैं। नदियों पर बड़े-बड़े बांधों का बनाया जाता उसी का एक अंग है। इससे वर्षा का अतिरिक्त जल एक जगह दृढ़ता के साथ संगृहीत कर लिया जाता है, इससे बाढ़ आने का अन्देश कम हो जाता है तथा उस एकत्रित जल का विद्युत्-उत्पादन, कृषि-भूमि सिंचन आदि अनेक रूपों में सदुपयोग किया जाता है।

भूकम्प, तूफान आदि के विषय में अग्रिम सूचना प्राप्त कर लेना भी उनसे आंशिक बचाव का उपाय है। यह सब भौतिक विज्ञान का फल है। इस विवरण से हमने यह

समझा कि मन्त्रों में 'मृत्यु' पद का प्रयोग उन सांसारिक दुःखों के लिये हुआ है, जो शास्त्रीय परिभाषा में 'ताप त्रय' के नाम से जाने जाते हैं। इनसे पार पाने का साधन प्राकृत तत्त्वों का यथार्थ ज्ञान और उसका सदुपयोग है, जो आज भौतिक-विज्ञान के नाम से सर्वविदित है। मन्त्रों में इसी को विनाश एवं अविद्या पदों से कहा है। इस प्रकार मानवदेह रूप अनिवार्य माध्यम के द्वारा सांसारिक दुःखों को पार करता हुआ व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार कर अमृत को प्राप्त कर लेता है। मानव देह की अनिवार्यता के कारण ही सबसे अन्त में 'सम्भूत्या अमृतमश्नुते' कहा गया है।

अमृत-प्राप्ति की यह प्रक्रिया या पद्धति बताई गई। अब प्रलयकाल का अवसान होने को है, सर्ग सद्य प्रारम्भ होने को है, उस अवसर पर आत्मा मानवदेह प्राप्ति की भावना को लक्ष्य कर चेतन प्रकाश स्वरूप प्रभु से प्रार्थना करता है-

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

तत् त्वं पूषन्नपावृणु, सत्यधर्माय दृष्टये।।

हिरण्मय-ज्योतिर्मय-तेजोमय पात्र से सत्य का, प्रवाहरूप में सदा रहने वाले सद्रूप जगत् का मुख प्रारम्भ अपिहितम्- आच्छादित है, ढका हुआ है। तात्पर्य है, समस्त विश्व चाहे यह कारण रूप है अथवा कार्य रूप में, वह सदा सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक परमात्मा का जहाँ तक अस्तित्व है, उसी में सीमित रहता है। परमात्मा से छूटा कोई स्थान नहीं है, इसलिये उसके बाहर..... विश्व के या विश्व के किसी अंश के होने का प्रश्न ही नहीं उठता। वेद में अन्यत्र (पुरुषसूक्त) कहा, यदि परमात्मा के सर्वव्यापकत्व को चार भागों में विभक्त करने की कल्पना की जाय, तो समस्त विश्व अनन्तानन्त लोक-लोकान्तर उसके एक भाग में ही सीमित रह जाते हैं। इस प्रकार चेतन परमात्मा द्वारा सम्पूर्ण जगत् ढका हुआ है, अपने अन्दर समेटा हुआ है। इस पर भी विश्व अपने रूप में सदा सत्य है।

इसी भाव को प्रस्तुत उपनिषद् के प्रारम्भ में लिखे सन्दर्भ 'पूर्णमदः पूर्णमिदं' द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। अदस्- वह परोक्ष परमात्म-चेतन पूर्ण है। इदम्- यह प्रत्यक्ष दृश्यमान् जगत् पूर्ण है। अपने-अपने अस्तित्व में दोनों पूर्ण हैं। जिसका जो कार्य है, उसके लिये किसी को एक-दूसरे से उधार नहीं लेना पड़ता, न अदस् कभी इदम् होता है और न आंशिक मात्र भी इदम् कभी अदस्। ये

दोनों अपनी जगह अपने अस्तित्व में पूर्ण हैं, क्योंकि इदम् सर्वव्यापक अदस् में सीमित होते हुए भी पृथक् है, इसलिये अदस् पूर्ण में से इदम् पूर्ण का उदञ्चन कर लिया जाता है- 'पूर्णात् पूर्णमुदच्यते' इदम् पूर्ण परिणत कर लिया जाता है, अदस् अपरिणत रह जाता है। सन्दर्भ के उत्तरार्द्ध से इसी भाव को अभिव्यक्त किया- 'पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।'।

फलतः जगत् का मूल उपादान तत्त्व त्रिगुणात्मक प्रधान प्रलय काल में परमात्मा की गोद में सोता रहा। अब प्रलय का अवसान है। अब प्रभु की प्रेरणा से प्रकृति का मुख खुल जाता है। त्रिगुण सन्दर्भों में क्षोभ होगा, अन्योन्य मिथुन होकर सर्ग प्रारम्भ हो जायेगा। प्राणि सर्ग में मानवदेह प्राप्त कर आत्मा अपने अपरिहार्य उपादेय की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हो उठेगा। इस भावना से प्रभु के प्रति प्रार्थना करता है-

तत् त्वं पूषन्नपावृणु, सत्यधर्माय दृष्टये।

जिस व्यवहार्य सत्य जगत् को तुमने अभी तक ढका हुआ है, हे पूषन्! सबका पोषण करने वाले प्रभु! अब उसे 'अपावृणु'- खोल दो। प्रश्न होता है, क्यों खोल दिया जाय? उसे खुलवा कर क्या करोगे? उत्तर आया- 'सत्य धर्माय दृष्टये' सत्य धर्म की जानकारी के लिये, क्योंकि सर्ग रचना के अनन्तर मानव देह प्राप्त होने पर ही सत्यधर्म-अध्यात्म-अधिभूत धर्मों की जानकारी सम्भव है, उसी के आधार पर परम पद प्राप्त हो सकता है।

सर्ग के अनन्तर आत्मा को मानव देह प्राप्त हो गया। शास्त्रीय पद्धति के अनुसार योगाङ्गों के अनुष्ठान एवं औपनिषद् उपासनाओं द्वारा आत्मा ने अपने चैतन्य रूप का साक्षात्कार कर लिया है। उसके फलस्वरूप वह प्रभु के कल्याणतम् आनन्दस्वरूप का अनुभव कर रहा है। तब प्रभु से प्रार्थना करता है-

पूषन्नेकर्वे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह।

पूषन्! सबका पोषण करने वाले जगदुत्पादक परमात्मन्!

एकर्वे! एक मात्र सर्वज्ञ वेदोत्पादक प्रभो!

यम! समस्त विश्व का नियन्त्रण करने वाले, अखिल लोक-लोकान्तरों के नियामक, व्यवस्थापक! सर्वान्तर्यामिन्! सर्वशक्तिमान् प्रभो!

सूर्य- सर्वत्र प्रसृत! सर्वव्यापक! अपरिणामिन्!

परमात्मन्! इस पद का यहाँ वही अर्थ अपेक्षित है, जो प्रस्तुत उपनिषद् की चौथी कण्डिका (अनेजदेक) में विवृत किया गया है।

प्राजापत्य! सब प्रजाओं-जड़ चेतन के पालक एवं स्वामिन्! अब

व्यूह- मूल स्रोत से जो अनेकानेक विविध धाराओं में संसार प्रवाहित किया था, उसे सीमित कर लो,

रश्मीन् समूह- जैसे सूर्य दिन का कार्य सम्पन्न हो जाने पर रश्मियों को समेट लेता है, ऐसे ही हे प्रभो! मूल स्रोत से प्रवाहित इन सब सहस्र-सहस्र विविध जगती धाराओं को मेरी ओर से समेट लो, अब इन धाराओं को मुझे अपेक्षा नहीं है। मेरे लिये जो प्राप्तव्य था, वह प्राप्त कर लिया है।

प्रश्न उभरा, अभी दुहाई दे रहा था, इस हिरण्य पात्र से ढके सत्य के मुँह को खोलो, जब वह सत्य व्यवहार्य जगत् प्रसृत कर दिया, तब इसे समेटने के लिये हल्ला मचा रहा है, जो प्राप्तव्य था, वह तूने इसमें क्या पा लिया? उत्तर आया- **यत्ते कल्याणतमं रूपं तत्ते पश्यामि**

जो तुम्हारा सर्वोच्च कल्याणमय रूप है, उस तुम्हारे कल्याणमय रूप को साक्षात् देख रहा हूँ। यही तो मानव जीवन का प्राप्तव्य अन्तिम लक्ष्य है। उसे प्राप्त कर लिया है। तब उस अवस्था का अवाधित अनुभव बताया-

योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि

जो वह दूर-अति दूर प्रकृति सम्पर्क से अभिभूत मेरे लिये सर्वथा अन्तर्हित पुरुष था, यह अब साक्षात् दीख रहा है। उसके आनन्द स्वरूप का अनुभव कर रहा हूँ, तब वैसा ही तो मैं हूँ। जीवात्मा-परमात्मा के चैतन्यरूप में कोई अन्तर नहीं होता। अन्तर चैतन्य का नहीं है, वह इस प्रकार का है- परमात्मा सर्वत्र है, जीवात्मा अल्पज्ञ है 'ज्ञ' दोनों हैं, अथवा 'ज्ञता' दोनों में समान है, केवल विषयस्तर वा ग्राह्य स्तर का भेद है। अभी तक प्राकृत धाराओं में प्रवाहित आत्मा इन्द्रिय-ग्राह्य विषयों में आप्लावित रहा। अब उपयुक्त उपायों के अनुष्ठान से अपने शुद्ध चैतन्यरूप का साक्षात्कार कर लिया है, प्रकृति का गहरा परदा बीच से हट गया है। इसी दशा में प्रभु का- आनन्दरूप प्रभु का- साक्षात् दर्शन हो रहा है। तब आत्मद्रष्टा जीवन्मुक्त अपना अनुभव बताता है, वह मैं हूँ, अर्थात् जो वह है, वैसा ही मैं हूँ। अत्यन्त सादृश्य तादात्म्य का प्रयोग सर्वशास्त्र सम्मत है। इससे

जीवात्मा-परमात्मा की एकता या अभिन्नता करना पूर्णतः अशास्त्रीय होगा।

इस प्रकार जहाँ कहीं जीवात्मा-परमात्मा की एकता या अभिन्नता का उल्लेख आपाततः दृष्टिगोचर होता है, वहाँ सर्वत्र उसे औपचारिक ही समझना चाहिये। ऐसे प्रयोग-मुख को चन्द्र कहने के समान- सर्वत्र भेदमूलक ही सम्भव हैं। अन्यथा-

**निरीक्ष्य विद्युन्नयनैः पयोदो मुखं निशायामभिसारिकायाः।
धारानिपातैः सह किन्नु वान्तश्चन्द्रोऽयमित्यार्ततरं ररासः॥**

क्या यहाँ अद्वैतवादी सचमुच चन्द्र को मेघ की जलधाराओं के साथ भूमि पर गिरा समझेगा? वस्तुतः यहाँ मुख और चन्द्र के अति सादृश्य का ही द्योतन है। जलधाराओं के साथ चन्द्र कभी भूमि पर नहीं आ सकता। दोनों का भेद स्पष्ट है। चन्द्र अपनी जगह है, मुख अपनी जगह। इसी प्रकार जीवात्मा परमात्मा का परस्पर स्पष्ट भेद होने पर भी 'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि' सन्दर्भ द्वारा मोक्षदशा में दोनों के तादात्म्य का अतिदेश उनके अति सादृश्य को ही अभिव्यक्त करता है। फलतः जीवात्मा परमात्मा के अभेद वर्णनों में सर्वत्र यही व्यवस्था समझनी चाहिये। विषय का उपसंहार करता है-

'वायुरनिलममृतम्-अथेदं भस्मान्तं शरीरम्।'

प्राण वायु से उपलक्षित, 'अनिलम्' निर्दोष, निर्विकार, अपरिणामी, आत्मतत्त्व 'अमृतम्' अमृत है, अमरणधर्मा है और यह शरीर भस्म हो जाने तक है। तात्पर्य है, इस नश्वर शरीर में चेतनतत्त्व अपरिणामी है, जब तक शरीर में वह तत्त्व बैठा है, शरीर संचालित रहता है। आत्मा का वियोग हो जाने पर शरीर भस्म कर दिया जाता है। आत्मा अपने कर्मों के अनुसार अगली योनियों को प्राप्त होता है। इसी को मन्त्र के अन्तिम भाग से कहा-

क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर।

मानव देह को प्राप्त कर आत्मा प्रकृति सम्पर्क में डूबा हुआ इस यथार्थ को बार-बार भूल जाता है कि इस देह को सावधानतापूर्वक सदुपयोग करना अभीष्ट है। मन्त्र एकाधिक बार कहकर इसी तथ्य को समझा रहा है, हे क्रतो! कर्तव्यनिष्ठ आत्मन्! 'कृतं स्मर' अपने किये का स्मरण कर। कर्मों के अनुष्ठान में तूने मानव देह का सदुपयोग किया? यही देह अमृत प्राप्ति का माध्यम है। जिसने इसे समझा, उसने पाया, जिसने न समझा, उसने खोया।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष-साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकारी प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष-ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिखकर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर 'मन्त्री, परोपकारिणी सभा' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले २५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलायें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

संस्था – समाचार

- लेखराम आर्य

प्रातःकालीन प्रवचन में ऋग्वेद के चौथे मण्डल के बत्तीसवें सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि राजा को उत्तम विद्वानों के मार्गदर्शन में शासन करना चाहिये। राजा का मुख्य कर्तव्य उपलब्ध साधनों को प्रजा के कल्याण और उन्नति के लिए उचित रीति से उपयोग करना है। प्रजाहितैषी विद्या और विनय से युक्त धार्मिक राजा को विचारशील, ज्ञानी, श्रेष्ठ बुद्धिजीवी, बहुत बुद्धिमान् मनुष्यों अर्थात् अध्यापकों, उपदेशकों, लेखकों और जनप्रतिनिधियों द्वारा सब प्रकार से प्रशंसा प्राप्त हो। प्रजा को नियम में चलाना राजा का कर्तव्य है। तभी राजा स्थिरतापूर्वक राज्य संचालित कर सकता है।

आचार्य सोमदेव जी ने कहा कि समाज में, संसार में बान्धने और बन्धने की प्रवृत्ति देखी जाती है। अथर्ववेद में प्रार्थना है- हम अपने रास्ते से बन्धे रहें, विचलित न हों। कर्तव्य कर्मों से बन्धे रहें, कामचोर न हो जायें। हमारे मन में कोई बुराई न ठहरे। सेवाकार्यों से बन्धे रहें, किन्तु अभिमान से दूर रहें। हम परमेश्वर के नियमों से, वेद के आदेश और वैदिक सिद्धान्तों से बन्धकर रहें। स्वेच्छा से बन्धेंगे तो हमारे लिए कल्याणकारी होता है। जो परमेश्वर की आज्ञा से, वेद से बन्धना नहीं चाहता, किन्तु संसार से बन्धना चाहता है या स्वेच्छा से स्वयं को बान्ध लेता है तो वह बन्धन उसके पतन का कारण बन जाता है।

प्रातःकालीन प्रवचन में ऋग्वेद के चौथे काण्ड के बत्तीसवें सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि अध्यापक और उपदेशक की समाज और देश में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। ब्राह्मण अर्थात् वेद शास्त्रों के विद्वान् ही अध्यापक और उपदेशक हो सकते हैं। क्षत्रिय-योद्धा और वैश्य-कृषक, गोपालक, व्यापारी, व्यवसायी, उद्योगपति आदि को ब्राह्मण ही शिक्षित करता है। ब्राह्मण भिक्षा मांग सकता है, क्षत्रिय

और वैश्य नहीं मांग सकते। ब्राह्मण का मुख्य कार्य विद्या का अध्ययन-अध्यापन होता है। सम्पूर्ण विद्याओं को धारण करने वाले ब्राह्मण की प्रशंसा होती है। ब्राह्मण आत्मज्ञानी होता है, ईश्वर के यथार्थ स्वरूप और संसार को ठीक प्रकार से जानता है। सच्चा ब्राह्मण धन आदि के लोभ से रहित होता है। संसार के विषयों से प्रभावित नहीं होता। पक्षपातरहित न्याय आचरण करने वाला होता है। वह सुख, दुःख, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि में सहनशील रहता है।

स्वामी सोमानन्द जी ने कहा कि मन में पाप आना स्वाभाविक है, किन्तु उसे दूर करने का निरन्तर प्रयास करना चाहिये, क्योंकि पाप के विचारों की हमें कोई आवश्यकता नहीं है। कोई भी मनुष्य या पशु-पक्षी बन्धन नहीं चाहता है, किन्तु पाप के विचार ही हमारे बन्धन के कारण बनते हैं।

श्री रमेश मुनि जी ने कहा कि संसार में अधिकांश मनुष्य असंतुष्ट दिखाई देते हैं। चाहे वह गरीब या अमीर हो, उद्योगपति या नेता हो, मूर्ख या विद्वान् हो, लेखक या खिलाड़ी हो, अधिकारी या कर्मचारी हो, सेवक या मठाधीश हो। प्रत्येक मनुष्य अन्य मनुष्यों से हमेशा आगे रहना चाहता है। यह स्वाभाविक है कि किसी भी मनुष्य की सभी इच्छाएँ पूरी नहीं हो सकतीं। वर्तमान में जो कुछ भी प्राप्त है उससे तृप्त न रहकर सदा भविष्य की चिन्ता में लगे रहते हैं। जो बहिर्मुखी होता है अर्थात् सांसारिक भोग, इन्द्रियों के विषय और पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा करता है, वह मनुष्य बेचैन रहता है, उसे शान्ति नहीं मिलती। वेदशास्त्र हमें जीवन जीने के दो उपाय बताते हैं- प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग। प्रेय मार्ग में चलकर सांसारिक सुख भोग और श्रेय मार्ग में जाने पर आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है। जीवन-मृत्यु के चक्र से छूटने और परम शान्ति, स्थायी आनन्द, सहजता, सरलता, अविकृत प्रेम प्राप्त करने के लिए श्रेय मार्ग पर चलना

होगा।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन में **ब्र. सत्यव्रत जी** ने कहा कि बल और सिर्फ बल ही हमारे सभी रोगों की एकमात्र दवा है। उपनिषद् में ऋषियों ने आत्मा-परमात्मा को जानने और उसे प्राप्त करने का एकमात्र उपाय बल को बताया है। बल के बिना हम अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकते।

ब्र. वेदप्रकाश जी ने कहा कि संसार के मनुष्यों में विविध प्रकार की जिज्ञासाएं समय-समय पर उठती रहती हैं। अधिकांश लोगों की जिज्ञासाएं सांसारिक विषयों के सम्बन्ध में ही होती हैं। मनुष्य रूप, रस, गन्ध आदि को जानकर उनको भोगना चाहता है। ऋषिगण शब्द आदि विषयों को छोड़कर ईश्वर के विषय में विचार करते हैं, जिस पर सामान्य बुद्धि वाले मनुष्य ध्यान नहीं देते। ईश्वर को जानने से पहले स्वयं को जानना आवश्यक है।

१२ मार्च को परोपकारिणी सभा द्वारा भरतपुर के वाल्मीकि समाज में प्रचार कार्यक्रम:- 'पं. लेखराम मिशन' के समर्पित कार्यकर्ता श्री लक्ष्मण जी और उनके साथियों ने मिलकर योजना बनाई कि भरतपुर में २०० हरिजन परिवारों को यज्ञोपवीत देकर यज्ञ करवायेंगे। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभा मंत्री ओममुनि जी के साथ १५ व्यक्तियों का एक दल ऋषि उद्यान, अजमेर से भरतपुर पहुँचा। इस कार्यक्रम में श्रीमती ज्योत्स्ना जी, श्रीमती उषा जी, श्री रमेश मुनि जी, श्री देवमुनि जी, श्री किशोर काबरा जी, ब्र. सत्यव्रत जी, ब्र. शक्तिनन्दन जी, ब्र. शिवनाथ जी, ब्र. सोमेश जी सम्मिलित हुए। श्री प्रभाकर जी ने यज्ञ एवं मंच-संचालन किया। आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश तथा अलीगढ़ के आर्यवीरों के सहयोग से बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के लिए ७२ कुण्डों की व्यवस्था की गई थी। वाल्मीकि समाज के सैकड़ों स्त्री-पुरुष, बच्चों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया। सभी विद्वानों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों ने यज्ञ करने वाले हरिजन परिवारों के साथ बैठकर भोजन किया। इस कार्यक्रम में हरिजन महिलाओं एवं युवाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

हरिजन समाज के लोगों ने इस कार्यक्रम को प्रतिवर्ष करने का संकल्प लिया। परोपकारिणी सभा और आर्यवीर दल दिल्ली की ओर से प्रचार-सामग्री बाँटी गई। अनेक स्थानों से आर्यसमाज के पदाधिकारी एवं सदस्यगण इस कार्यक्रम में पहुँचे। इस कार्यक्रम में सेवा भारती संस्थान का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री ओममुनि जी और पं. रामनिवास गुणग्राहक के व्याख्यान हुए। अपने सम्बोधन में सभा मंत्री श्री ओममुनि जी ने कहा कि जब तक छुआछूत को हम अपने मन से नहीं निकालेंगे तब तक छुआछूत समाप्त नहीं होगा। हम अपने कार्यक्रमों में अपने हरिजनों को बुलायें और उनके कार्यक्रमों में हम जायें, साथ बैठें और साथ भोजन करें। स्वामी सोमानन्द जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया।

१३ मार्च सोमवार को होली का पर्व सम्पन्न- प्रातःकाल विशेष यज्ञ के पश्चात् ९ से १२ बजे तक गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों और नगर से आये हुए महिलाओं, पुरुषों, बच्चों ने इस पर्व के सम्बन्ध में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। होली के गीत और ईश्वरभक्ति भजनों के कार्यक्रम हुए। होली का यह पर्व देश के अलग-अलग स्थानों पर वहाँ के स्थानीय रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। **सभा मंत्री श्री ओममुनि जी** होली (वासंती नवशस्येष्टि पर्व) के विषय में बताया कि यह वैदिक परम्परा का यह बड़ा पर्व है। आम जनता में आज पर्वों का रूप बिगड़ गया है। अग्नि में प्रवेश करने पर प्रहलाद के बचने और होलिका के जलने की कथा काल्पनिक है। होली में अनावश्यक रूप से पूरे देश भर में लाखों टन लकड़ी जलाने से जंगल नष्ट हो रहे हैं। बड़े-बड़े शहरों में दाह संस्कार के लिए भी लकड़ी मिलना कठिन हो गया है। जहाँ कहीं मिलती है वहाँ बहुत मूल्य चुकाना पड़ता है। गरीब आदमी लकड़ी की कीमत नहीं चुका पाता। **ब्र. मनोज जी** ने कहा कि हमारे देश में जितने भी पर्व मनाये जाते हैं उन सबका ऋतुओं से, हमारे स्वास्थ्य से और ऋषियों की प्राचीन परम्पराओं से गहरा सम्बन्ध है। इन पर्वों का वैज्ञानिक महत्त्व भी है। होली में बड़े-बड़े यज्ञ करने चाहिये।

वर्तमान में स्वरूप बदलने से पर्व प्रेरणादायक नहीं रह गये। लाभ के स्थान पर हानियाँ हो रही हैं। श्री रमेश मुनि जी ने कहा कि प्रत्येक पर्व में हम यज्ञ करते हैं। यज्ञ हमें विद्वानों के सत्कार, संगतिकरण और दान के लिए प्रेरित करता है। विद्वानों के उपदेश प्रवचन से हमें पता चलता है कि पर्व का हमारे लिए क्या महत्त्व है। ब्र. रविशंकर जी ने कहा कि प्रत्येक पर्व उत्साह देने वाला होता है। ऋषियों की जीवन-प्रणाली को हम व्यवहार में लायें। वसंत ऋतु अन्य सभी ऋतुओं की अपेक्षा अधिक सुखदायक और उत्साहवर्धक होता है। ब्र. सत्यव्रत जी ने स्वरचित गीत सुनाया। ब्र. वरुणदेव जी ने भी गीत सुनाया। डॉ. नन्दकिशोर काबरा जो ने होली पर्व स्वरचित कविता सुनायी। श्री वासुदेव आर्य और उनकी पत्नी ने साथ-साथ होली का गीत सुनाया।

आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-

सम्पन्न कार्यक्रम:-

(क) १७-१९ मार्च २०१७ आर्य समाज, पलवल।

(ख) २०-२६ मार्च २०१७ आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली।

(ग) २७-२९ मार्च २०१७ आर्य समाज कुचेरा, जि. नागौर।

आगामी कार्यक्रम:-

(क) १-२ अप्रैल २०१७: खेड़ा अफगान आर्यसमाज सहारनपुर।

(ख) ३-९ अप्रैल २०१७: वानप्रस्थाश्रम, रोजड़।

(ग) १७-२३ अप्रैल २०१७: आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली।

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञकर्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इस से ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

आवश्यक-सूचना

परोपकारिणी सभा की रसीद-बुक (रसीद संख्या ४५५१ से ४६०० तक) ऋषि मेले के समय खो गई है, जिसमें संख्या ४५५१ से ४५८८ तक की रसीदें कटी हुई हैं। इन संख्याओं की रसीदें जिन भी महानुभावों के नाम से काटी गई हों वे कृपया अपनी रसीद की एक फोटो कॉपी सभा के पते पर अवश्य भेज दें।

- मन्त्री

आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में स्थिर-निधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करते समय तीन उद्देश्य रखे थे-

१. वेद और वेदांगादि शास्त्रों के प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने, छापने-छापवाने आदि में, २. वेदोक्त-धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक-मण्डली नियत करके देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग कराने आदि में ३. आर्यावर्तीय अनाथ और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा में व्यय करें और करावें।

इन कार्यों को करने के लिये सभा का वर्तमान मासिक व्यय लगभग १२ लाख रुपये है, जो कि आर्यजनों के दान पर ही निर्भर है। परोपकारिणी सभा के कार्यकारिणी अधिवेशन सं. २२९ एवं साधारण अधिवेशन सं. १२० के प्रस्ताव १३ में आचार्य धर्मवीर जी द्वारा प्रारम्भ किये गये बृहत् प्रकल्पों (प्रकाशन, प्रचार, अध्यापन आदि) के लिये आचार्य धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रुपये की स्थिर-निधि बनाने का संकल्प लिया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में अपना अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर आचार्य जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ— प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। **गुरुकुल**— आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। **अतिथि सेवा**— अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। **गोशाला**— गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। **वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम**— वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। **विशाल पुस्तकालय**— इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। **व्यायामशाला**— योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प संसार का उपकार की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ मार्च २०१७ तक)

१. श्री मांगीलाल गोयल, अजमेर २. श्रीमती अमरीश त्यागी, अजमेर ३. श्री बद्रीप्रसाद-कमला देवी पंचौली, अजमेर ४. श्री सत्येन्द्र बालोट, जोधपुर ५. श्री आनन्द मिश्रा, श्रीगंगानगर ६. श्री इन्द्रेण जादोन, अजमेर ७. श्रीमती ऐश्वर्या, अजमेर ८. श्री घनश्याम गर्ग, जगाधरी ९. श्री सुरेन्द्र कम्बोज, जगाधरी १०. श्री अरविन्द आर्य, जगाधरी ११. श्री पंकज आर्य, जगाधरी १२. श्री जयकिशन आर्य, नई दिल्ली १३. श्रीमती गजरादेवी नागा, सुमेरपुर १४. श्रीमती शान्ति-श्रद्धानन्द शास्त्री, अजमेर १५. श्री महेन्द्र नागपाल, दिल्ली १६. श्रीमती उषा आर्य, अजमेर १७. डॉ. अर्चना विनोद, अजमेर १८. श्री मोहनलाल गंगवार, अजमेर १९. श्री नरेश कुमार, करनाल २०. श्री ईश्वरदयाल माथुर, जयपुर २१. डॉ. रमेश मुनि, अजमेर।
- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ मार्च २०१७ तक)

१. श्री बद्रीप्रसाद पंचौली, अजमेर २. श्रीमती कमला देवी पंचौली, अजमेर ३. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर ४. श्री दिनेश कुमार गौरा, अजमेर ५. श्री कैलाशसिंह शर्मा, अजमेर ६. श्री नरेन्द्र, नई दिल्ली ७. श्री निर्मलसिंह, अजमेर ८. डॉ. रमेशमुनि- उषा आर्य, अजमेर ९. श्री मोहनलाल गंगवार, अजमेर १०. श्री धर्मवीर रोहिणी, अजमेर ११. कु. निकिता तनेजा, अजमेर १२. श्री किशनाराम आर्य, नागौर १३. श्रीमती पुष्पा आर्य, नागौर १४. श्री सन्तोष बेदी, दिल्ली १५. श्रीमती तरुणा गहलोत, अजमेर १६. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर १७. श्री राजेश त्यागी, अजमेर १८. श्री रोशनलाल, अजमेर १९. श्री चिरंजीलाल, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १४ से २१ मई, २०१७ आर्यवीर शिविर, सम्पर्क- ०९४६००१६५९०
२. २८ मई से ०४ जून, २०१७ आर्य वीराङ्गना शिविर, सम्पर्क- ०८८२३९४५९५६
३. १८ से २५ जून, २०१७- योग-साधना शिविर, सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

सामाजिक समरसता महायज्ञ : एक अभूतपूर्व आयोजन

-डॉ. किशोर काबरा

शौर्य, सौन्दर्य और सौमनस्य की भूमि अर्थात्-भरतपुर, संघर्ष, संग्राम और समाधान की स्थली, अर्थात् -भरतपुर, प्राकृतिक वैभव, खनिज सम्पत्ति और पक्षी-अभयारण्य जैसी सुन्दर धरती अर्थात् भरतपुर तथा शिल्प, संस्कृति और शब्द की संवाहिका, अर्थात् भरतपुर की माटी। जी हाँ, भरतपुर में कई त्रिवेणियां प्रवाहित होती हैं। वहाँ ११ मार्च २०१७ एक नई त्रिवेणी का उद्गम हुआ- सामाजिक समरसता, अछूतोद्धार एवं आध्यात्मिक चिन्तन की नवीन धारा का, जिसने देश की दलित चेतना के इतिहास में नया अध्याय जोड़ा है। परोपकारिणी सभा, अजमेर के मन्त्री श्री ओममुनि जी के कुशल नेतृत्व में पण्डित लेखराम वैदिक मिशन ने इस क्षेत्र के लगभग २०० वाल्मीकि परिवारों को एक ही मण्डप में बिठाकर ७२ कुण्डीय वैदिक महायज्ञ का अभूतपूर्व आयोजन किया, जिसमें भारत भर के १०० से भी अधिक कार्यकर्ता, आर्यवीर, वैदिक विद्वान् तथा समाज सुधारक एकत्र हुए। यह वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास दीक्षा का शताब्दी वर्ष है, जिसे परोपकारिणी सभा सामाजिक आयोजनों के साथ मनायेगी, यह समरसता यज्ञ उसी का प्रारम्भ है।

विचार प्रस्फुटन:- पण्डित लेखराम वैदिक मिशन के सदस्य श्री रामप्रकाश जी दिसम्बर माह में अपने गृह नगर भरतपुर में एक विवाह समारोह में सम्मिलित हुए, इसी दौरान वहाँ के सरपंच श्री सुभाष कटारा से चर्चा करते हुए पता लगा कि आज भी दलित परिवार के अनेकों सदस्य अपने हाथों से मैला ढोने का काम करते हैं

रामप्रकाश जी का मन इस दुःखद वास्तविकता से व्यथित हो गया और उन्होंने वहाँ से चलते ही रास्ते में ही यह निश्चय कर लिया कि वे अपने इस गृह नगर से इस सामाजिक बुराई को हटाने की दिशा में कार्यरत होंगे।

प्रारम्भिक कार्य- श्री रामप्रकाश जी ने दो कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की तथा भरतपुर शहर से वाल्मीकि समाज की चार बस्तियों का चुनाव किया गया, दोनों कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर वहाँ के निवासियों से विचार-विमर्श

किया और उन युवकों की सूची तैयार की जो विभिन्न कौशल में कुशल होने के लिए उत्सुक थे एवं तदनुसार उनकी ट्रेनिंग की व्यवस्था की गई।

प्रातःकाल से ही वाल्मीकि परिवार के सदस्य नहा-धोकर तथा स्वच्छ परिधान पहनकर झुण्ड के झुण्ड स्त्री-पुरुष-बालक -बालिकाएँ सभी यज्ञ-स्थल पर आने लगे थे। प्रतिकूल मौसम के बावजूद कार्यकर्ताओं ने बड़ी मेहनत और लगन से यज्ञ-मण्डप को सजाया था। चारों ओर ध्वज लगाए थे, द्वार पर रौली से चित्ताकर्षक रंगोली की गई थी। बड़े-छोटे कई बैनर पूरे परिवेश को भव्यता तथा स्तरीयता प्रदान कर रहे थे। ७२ यज्ञ कुण्डों को चार पंक्तियों में यज्ञ-सामग्री के साथ पूरी गरिमा देकर सजाया गया था। सामने की ओर विशाल मंच था, जिस पर विशिष्ट महानुभावों, वक्ताओं, प्रतिष्ठित आमंत्रितों एवं संयोजकों को प्रणव-पट्टिका पहना कर पूरे सम्मान के साथ बिठाया गया था। विभिन्न कार्यकर्ता, अतिथिगण एवं मार्गदर्शक बीच-बीच में खड़े रहकर यज्ञ-प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने के लिए यजमानों और होताओं की सहायता कर रहे थे। बड़ा आकर्षक दृश्य था।

ओ३म् के उद्घोष और वेद-मन्त्रों के साथ यज्ञ प्रारंभ हुआ। सभी होताओं को यज्ञोपवीत पहनाये गए। यज्ञ के ब्रह्मा ने हवन की सभी प्रक्रियाओं को वैदिक मन्त्रों के साथ पूरे विधि-विधान से सम्पन्न कराया और गायत्री मन्त्र का सम्पुट देकर सभी वाल्मीकि होताओं को दुर्व्यसन-मुक्ति का संकल्प दिलवाया। 'स्वाहा' की ध्वनियों से मानो दसों दिशाएँ गूँज रही थीं। एक पावनतम परिवेश-निर्मित हो रहा था।

यज्ञ के बाद प्रवचन, उद्बोधन, भजन आदि से समन्वित चिन्तनात्मक मंचीय कार्यक्रम हुआ। आदरणीय श्री ओममुनिजी की अध्यक्षता में सम्पन्न उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवा भारती दौसा के प्रमुख श्री महावीर प्रसाद जी थे। साथ ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री दुर्गादास जी विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ

थे। मंच-संचालन श्री प्रभाकर जी आर्य ने बड़ी कुशलता से किया। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रकाण्ड विद्वान् एवं चिंतक स्व. डॉ. धर्मवीर जी की पत्नी श्रीमती ज्योत्स्ना धर्मवीर जी भी उपस्थित थीं। श्री नौबतराम जी वानप्रस्थी ने ईशवन्दना के रूप में प्रभावपूर्ण भजन प्रस्तुत किया। श्री रामनिवास जी गुणग्राहक ने गरिमामय प्रवचन दिया। गुरुकुल भुसावर की आचार्या प्रियंका जी ने प्रवचन के साथ सुमधुर एवं भावपूर्ण गीत भी सुनाया। इनके अतिरिक्त श्री वेदमुनि जी, आचार्य श्री रामचन्द्र जी, श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु जी आदि ने अवसरानुकूल अपने मूल्यवान विचार प्रस्तुत किया। अन्त में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री ओममुनि ने सामाजिक विषमताओं और नैतिक अधःपतन के विरुद्ध कमर कसकर खड़े होने का आह्वान आर्यसमाज के प्रत्येक घटक, प्रत्येक समूह एवं प्रत्येक व्यक्ति से किया और अपेक्षा की कि भविष्य में इससे भी अधिक बड़े कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता रहेगी।

कार्यक्रम के अन्त में श्री गोपाल जी धामनिया ने आभार-प्रदर्शन किया। फिर सभी अतिथियों ने वाल्मीकि परिवार के सदस्यों के साथ एक पंक्ति में बैठकर बड़े प्रेम से भोजन किया। सामूहिक भोज में भोजन परोसने का कार्य वाल्मीकि समाज के युवाओं द्वारा किया गया। समारोह के निर्विघ्न सम्पन्न होने और दूरगामी प्रभाव छोड़ने की खुशी सबके चेहरे पर झलक रही थी।

इस कार्यक्रम को पूर्णतः सफलता प्रदान करने वाले महानुभावों की सूची बड़ी लम्बी है। कई ज्ञात, अज्ञात और अल्पज्ञात लोगों ने तन, मन एवं धन से इस कार्यक्रम को ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। कार्यकर्ताओं में आपसी तालमेल इतना सुन्दर था कि जिसकी कोई मिसाल नहीं। इस समारोह में श्री रजनीश जी बंसल एवं सोनू जी का पूर्ण सहयोग रहा। दोनों ऋषि-भक्त कई घण्टों का सफर तय करके नियत स्थान पर आए थे। मिशन के स्तम्भ श्री लक्ष्मण जी जिज्ञासु भी अत्यन्त उत्साहपूर्वक भागदौड़ कर रहे थे, उनके भाई श्री राम प्रकाश जी भी पूरी तरह कार्यक्रम में पूर्णतः व्यस्त थे। दिल्ली से दो दिन पहले आये श्री मनीष जी और उनके साथियों ने पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था को एक गरिमा और स्तरीयता प्रदान की। दिल्ली आर्यवीर दल के नेता श्री जितेन्द्र

भाटिया एवं उनके १५ से अधिक कार्यकर्ताओं ने यज्ञ, भोजन एवं वाल्मीकि परिवारों के स्वागत-सम्मान की व्यवस्था में पूरी शक्ति लगाई। इनकी ओर से १०० हवनकुंडों, पात्रों एवं झण्डों का प्रबन्ध किया गया था। पौराणिक परिवार से जुड़े भाई रवीन्द्र जी भी श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' की पुस्तक पढ़कर इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए घर पर बिना बताए पैदल ही चलकर एक दिन पूर्व आए थे। चरखी दादरी से आये श्री मनोज जी और उनकी टीम ने यज्ञ-कार्यक्रम का कुशल संयोजन करके अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। इस अवसर पर ऋषि उद्यान अजमेर से भी १५ से अधिक महानुभाव उपस्थित रहे। जिनमें तपःपूत संन्यासी, साधक, वानप्रस्थी, स्नेहमयी माताएँ, लगनशील ब्रह्मचारी, कर्मठ कार्यकर्ता तथा वाहन एवं मीडिया से जुड़े सुयोग्य कर्मचारी थे। सभी ने पूरी तन्मयता, निष्ठा से और समर्पण भाव से परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री ओममुनि जी के निर्देशन में निर्धारित दायित्वों को पूरा किया। इस तरह एक गरिमामय प्रकल्प पूरी ऊँचाइयों को छूकर बड़ी ही प्रतिष्ठा के साथ पूरा हुआ।

सामाजिक समरसता के इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी वाल्मीकि परिवारों को परोपकारिणी सभा की ओर से 'दयानन्द जी का जीवन-चरित्र' पुस्तक एवं गायत्री मन्त्र के कैलेण्डर बाँटे गए एवं पण्डित लेखराम मिशन की ओर से 'आर्य समाज क्या है?' पुस्तक का वितरण किया गया। भीलवाड़ा से आये ऋषि मिशन के मंत्री श्री नन्दकिशोर की ओर से डॉ. धर्मवीर जी के व्याख्यानों की ३५० से अधिक सी.डी. बाँटी गई।

इस समारोह में स्थानीय व्यक्तियों, संस्थाओं और संगठनों ने भी भरपूर सहयोग दिया। जम्मू के श्री यशवन्त जी मेहता ने इस कार्यक्रम को आयोजित करने की प्रेरणा दी थी एवं खर्च होने वाली राशि का आधा हिस्सा स्वयं वहन करने की घोषणा भी आपने की। जोधपुर के श्री दुर्गेश जी अपने कैमरे में एक कुशल पत्रकार की तरह दृश्यों एवं ध्वनियों को कैद कर रहे थे। उन्होंने कई वाल्मीकि परिवारों के अनुभवों एवं प्रतिभावों को भी फिल्मांकित किया। इस समारोह में भरतपुर की तो पूरी साझेदारी थी ही, देश के विभिन्न कोनों से भी कार्यकर्ता उपस्थित हुए

थे। स्थानीय महानुभावों ने उन सबका यथोचित सत्कार किया। प्रशासन की भी पूरी मदद मिली। विशेष रूप से विनीता जी, अभिषेक कुमार जी, राहुल जी आदि ने सोशल मीडिया की कमान बड़ी खूबी से सम्भाली।

वो नन्हा आर्यवीर:- यज्ञ कार्यक्रम के लिए श्री मनोज जी (चरखी दादरी) से विमर्श किया गया। मनोज जी ने कहा कि वो अवश्य इस यज्ञ में आहुति देने के लिए भरतपुर पहुँचेंगे। मनोज जी ने कहा कि वो अपने मित्र के साथ १० मार्च रात्रि को भरतपुर पहुँचेंगे। श्री मनोज जी ने इस बारे में अपने पुत्र से भी विचार-विमर्श किया। वह इस तरह के कार्यक्रमों में अत्यन्त ही उत्साहपूर्वक भाग लेता है। पुत्र ने कहा “पिताजी पण्डित लेखराम जी तो ऐसे कार्यों के लिए चलती ट्रेन से कूद पड़े थे और आप केवल दो लोगों के साथ इस यज्ञ में सम्मिलित हो रहे हो। आपको तो विशेष रूप से इस यज्ञ में सहयोग करना चाहिए।” पुत्र के इन विचारों को सुनकर मनोज जी दंग रह गए और तुरन्त अपने मित्रों के साथ भरतपुर जाने के लिए प्रस्थान किया। धन्य है यह नन्हा आर्य!

यह कार्यक्रम प्रत्येक आर्य और मानवतावादी विचारधारा रखने वाले भारतीय का अपना कार्यक्रम था। जिनकी छाया से भी लोग दूर भागते थे, उन्हीं वाल्मीकियों की काया से लोग मिल रहे थे। अभी तक जन-समाज ने जिनकी उपेक्षा की थी, उन्हें आर्यसमाज गले लगा रहा था। भरतपुर के इतिहास में आज का दिन अछूतों और समरसता अभियान की दृष्टि से स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

दिनांक ११ मार्च २०१७ को भरतपुर में आयोजित इस महायज्ञ ने पूरे देश में एक नई हवा पैदा की है और स्वामी दयानन्द जी एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के अछूतों और दलितों को सामान्य प्रवाह से जोड़ने और जाति-पाँति के भेदभाव को समाप्त करके समाज में समरसता लाने की परिकल्पना को सार्थक किया है। परोपकारिणी सभा के

कई प्रकल्प हैं, कई स्वप्न हैं, कई आयोजन हैं, कई लक्ष्य हैं। सभा ने दयानन्द जी के हस्तलिखित ग्रन्थों और अन्य मूल्यवान् दस्तावेजों का डिजिटलाइजेशन किया है, ऋषि उद्यान को नया रूप, नया रंग और नया आकार दिया है, विभिन्न प्रान्तों में वेद-प्रचार यात्राएँ निकाली हैं, ऋषि साहित्य का प्रकाशन, वितरण एवं प्रदर्शन किया है, ‘सत्यार्थप्रकाश’ का निःशुल्क वितरण किया है, योग-शिविरों और ऋषि मेलों का आयोजन किया है, परोपकारी पत्रिका को वैश्विक स्तर पर चर्चित किया है। आज उसकी उपलब्धि में एक नया पृष्ठ और जुड़ गया। भरतपुर क्षेत्र के लगभग ४०० स्त्री-पुरुषों एवं बालक-बालिकाओं को एक ही शामियाने के नीचे बिठाकर पूरी श्रद्धा एवं आत्मीयता से वैदिक यज्ञ की परम्परा से संयुक्त किया तथा अवर्ण-सवर्ण तथा छुआछूत की दूषित भेदक रेखा को हमेशा-हमेशा के लिए मिटा दिया है।

वैदिक वाङ्मय में ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ एवं ‘वसुधैव-कुटुम्बकम्’ की भावना ही सर्वत्र रही है। वहाँ कहीं भी वर्ग-भेद, वर्ण-वैषम्य और जाति-वैभिन्य नहीं है। ‘दुरित’ समाप्त करने और ‘भद्र’ को प्राप्त करने की कामना ही इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य था, जो पूरा हुआ। अब कोई दलित नहीं था, अछूत नहीं था, अन्त्यज नहीं था। सब अन्त्यज से द्विज बन गए थे। तन-मन की शुचिता सबकी आँखों में झलकती थी। यज्ञ की ज्वालाओं में सबके दुष्कर्म और दुर्विचार जल गए थे। अग्नि की साक्षी में सब की आत्माएँ परमात्मा से मिल रही थीं। अब कोई द्वैत नहीं था। सबके मन समान थे, सबके विचार समान थे, सबकी आहुतियाँ समान थीं-

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेधाम्।

समानं मंत्रमभिमंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥

(ऋग्वेद-१०/१९१/३)

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

खेद - पत्र

वानप्रस्थाश्रम रोजड़ में चल रहे यज्ञ के इस बिन्दु कि "अन्य व्यक्ति के लिये भी यज्ञ किया जा सकता है" पर आर्यसमाज के वरिष्ठ विद्वान् प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी ने 'परोपकारी' पत्रिका में सैद्धान्तिक विरोध प्रकट किया, इससे क्षुब्ध होकर रोजड़ के स्नातक एवं वर्तमान में ऋषि उद्यान, अजमेर में निवास कर रहे स्वामी मुक्तानन्द द्वारा दिल्ली से प्रकाशित 'टंकारा समाचार' के मार्च अंक में छपे लेख में जिज्ञासु जी के प्रति कई अभद्र व अशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया। परोपकारिणी सभा द्वारा इस पर आपत्ति किये जाने पर स्वामी मुक्तानन्द ने अपने लेख में प्रयुक्त अशिष्ट शब्दों के लिए लिखित में खेद प्रकट किया। - सम्पादक

५५ औ३ म् ५५

माननीय श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु,

सादर नमस्ते ।

वानप्रस्था साधक आश्रम, रोजड़ में
१२ घण्टे चलने वाले अग्निहोत्र प्रशिक्षण
केन्द्र के बारे में परोपकारी में प्रकाशित
आप का लेख को पढ़ कर मैंने आपके
प्रति कुछ कठोर शब्दों का प्रयोग कर
लेख लिख दिया था ।

इस के लिए मुझे खेद है ।

रमेश अग्नि

अमृत

17-3-2017

धन्यवाद के साथ

स्वामी मुक्तानन्द

सच्चे-राम को ईश्वर बताने की झूठी-बैसाखी क्यों?

- पं. आर्य प्रह्लाद गिरि

सीधे-सच्चे हिंदुओं को ईसाई बनाने के लिये कमर कसकर भारत में आये फादर कामिल बुल्के भी अप्रक्षिप्त वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राजा रामचंद्र, सती सीता, महावीर हनुमान, भाई भरतादि के त्यागपूर्ण जीवन-चरित्रों को पढ़ते हैं, तो वेदकालीन प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का ऐसा उत्कृष्ट सुंदरतम -स्वर्णिम सुखद दृश्य देखते ही चिल्ला उठते हैं।

जिस तरह सैकड़ों शेक्सपियर भी रामचरितमानस-सा विश्व का सुंदरतम महाकाव्य नहीं रच सकते, उसी तरह राम-सा दिव्य महामानव (देवात्मा, देवदूत, बोधिसत्व-तथागत, तीर्थंकर, पैगंबर, प्रभुपुत्र, फरिश्ता) भी कोई हमें इतिहास के किसी पन्ने पर नहीं दिखला सकता। ऐसा इसलिये भी कि-

राम, तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है।

कोई कवि बन जाये, सहज संभाव्य है।।

-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

समुद्र को भी बांध देने वाले युगपुरुष हमारे राम मानव-धर्म के उच्चादर्शों पर इसलिये भी चलते रहे कि इनके ही पूर्वज राजर्षि मनु दुनिया वालों के सामने सगर्व घोषणा कर चुके थे-

एतत् देश प्रसूतस्य सकाशात् अग्र जन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।।

-(२.२०)

-धरती माता के सारे द्वीप-द्वीपान्तरों पर बसने वाले हर तरह के लोग इसी आर्यावर्त देश के अंगुओं (नेताओं, प्रतिनिधियों) से अपने-अपने अनुकूल उन्नत चारित्रिक सभ्यता-संस्कृति को सीखते रहें।

किन्तु आज दुनिया को छोड़ें, हिन्दू कहलाने वाले हम आर्यवंशी लोग भी अपने पूर्वज राम को ईश्वर (अन अनुकरणीय, सिर्फ चर्चा करने योग्य) कहकर इनके विचारों-व्यवहारों से कुछ भी नहीं सीखते। राम का नाम ले-लेकर बेधड़क रावण-पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। गले में ही नहीं, मंदिरों में भी राम के चित्र सजाकर रावण की ही

चरित्रोपासना में जुटे हुए हैं। अतः राम-विमुखों की जो दशा होनी चाहिये, वही दुर्दशा महाभारत युद्ध के बाद से आज तक हमारी होती जा रही है।

हल्दीघाटी में घास की रोटी खाकर भी जब मुगलों के प्रहारों को तपस्वी महाराणा प्रताप अपने तलवार से माँ भारत-भारती की रक्षा कर रहे थे, उसी समय उसी काम को सारी मुसीबतों को सहते हुए बड़ी बहादुरी, बुद्धिमानि और कुशलता से संत कवि गोस्वामी तुलसीदास भी अपनी सफल लेखनी से, काशी से भागकर अयोध्या में कर रहे थे। काल्पनिक ही सही, यदि श्रीमद्भागवत गीता को मौर्य गुप्तकाल में न लिखा जाता, तो सारे हिन्दू बौद्ध बन गये होते, और बामियान की विशाल बुद्ध-मूर्ति की तरह सारे बौद्धों को मिटा देना अरबी आक्रांताओं के लिये अत्यन्त सरल था। इसी तरह स्वराष्ट्र-धर्मरक्षक महात्मा तुलसीदास भी सरल और रोचक भाषा-शैली में शैव-वैष्णव का कलह मिटाते हुए रामचरितमानस को लिखकर अयोध्या के ही राजा राम को पूर्ण ब्रह्म परमात्मा बताने और सिर्फ हरिभजन को ही असली यज्ञ-पूजा बताने में यदि सफल न हो पाते, तो उस समय हमें मुहम्मदी, नमाजी और कुरानी बन जाना ही पड़ता।

जिस तरह हम राष्ट्र-धर्म-रक्षक चाणक्य, शंकराचार्य, गुरु गोविंद सिंह, शिवाजी, दयानन्द, सुभाष, सावरकर, पटेलालादि के उपकारों को नहीं भूलते, त्यों ही गीताकार और मानसकार को भी भारतीय वैदिक संस्कृति रक्षा हेतु 'भारत-रत्न' पुरस्कार जैसा कुछ न कुछ अविस्मरणीय-सम्मान तो मिलना ही चाहिये। भले ही इनके बनाये ये साहित्यिक-हथियार आज कुछ मोर्चों पर अनुपयुक्त, अप्रासंगिक हो गये हों, तथापि सेवानिवृत्तों (रिटायर्ड्स) की भाँति ये सादर पेंशन पाने के अधिकारी तो हैं ही।

अभी के लिये 'सत्यार्थ-प्रकाश' अत्यन्त अमोघ-औषधि व बुद्धिवर्धक टॉनिक है। जो वाल्मीकि रामायण और महाभारत की तरह ही श्री राम और श्रीकृष्ण को एक आदर्श महात्मा ही साबित करता है, परमात्मा नहीं।

पचास साल पहले तक अक्सर लोग कृतज्ञ-भावुकतावश डॉक्टरों को दूसरा भगवान् कह बैठते थे। आज भी हम त्यागियों-परोपकारियों-सहायकों को देवदूत-फरिश्ता-भगवान् कह देते हैं। इसी तरह हम अग्नि, आदित्य, वायु, अंगिरा, इंद्र, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, मनु, भगीरथ, परशुराम, राम, कृष्ण, व्यास, गौतम, कणाद, कपिल, पतंजलि आदि वैज्ञानिकों-ऋषियों को (देव-देवी) तो कह सकते हैं, किन्तु परमात्मा कदापि नहीं, क्योंकि वेदानुसार परमात्मा न तो जन्मता-मरता है और न किसी आकार में कभी बंधता है। तथा उसी निराकार एक अखंड अनंत ब्रह्म-ओ३म् से प्रकाश पा-पाकर अनेकों ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, शंकरादि जन्मते-मिटते रहते हैं (मानस-१.१४१.३) यही ज्ञान-प्रकाश पूर्ण सच्चिदानन्द ईश्वर, ध्यान-योग, प्रार्थना, प्राणायाम, हवन, परोपकार, सच्चाई, ज्ञान, ईमानदारी, सदाचार आदि द्वारा ही सभी मनुष्यों का परमोपास्य है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, मूसा, मुहम्मद, नानक, कबीर, दयानन्दादि भी इसी ईश्वर के उपासक रहे हैं। इन महान् ऐतिहासिक ईश्वर-भक्तों को ही ईश्वर मान लेना और इनकी मूर्ति को सजीव समझकर लड्डू-पेड़ादि खिलाने-पिलाने, सुलाने-जगाने का अभिनय करना-करवाना भारी मूर्खता या धूर्तता है। यह सिर्फ नास्तिकता ही नहीं, महापुरुषों का अपमान भी है।

राम और कृष्ण का मन्दिर बनाकर उनको खिलाने-पहनाने हेतु भीख-चंदा माँगना, इन्हीं की मूर्तियों के सामने यजमानों से झूठ बोलना, तंग करना साबित करता है कि ये निरक्षर पंडे लोग भी इन मूर्तियों को चेतन नहीं समझते। राम के प्राणप्रिय, वीर, वेदज्ञ, ब्रह्मचारी, शाकाहारी हनुमान जी को बंदरमुखी बना देने से भी इन पंडों को संतोष न हुआ तो अब ये बाघ, गीदड़, गधा, सूअर के मुख लगाकर पंचमुखी हनुमान को पुजवाने के दुस्साहस में लग गये हैं।

हमारे धार्मिक महापुरुषों के पुश्तैनी दलाल बन चुके पंडे लोग भली भांति जानते हैं कि जो भगवान् मीर कासिम से लेकर महमूद गजनी, मुहम्मद गौरी, सिंकदर लोदी, तैमूरलंग, औरंगजेब, कालापहाड़ का कुछ भी बिगाड़ न सका, वो मुझे क्या दंड देगा। सचमुच मंदिरों के सारे भगवान् इन पंडे-पुजारियों के सारे तमाशों के मौन समर्थक

ही बने रहते हैं।

हमारे प्रबुद्ध पाठको! यदि आप विश्व मानवता के प्रेरणा-पुरुष श्रीराम को कृतज्ञतावश प्रणाम करने भर की रस्म निभाना चाहें, तब तो ये मंदिर स्मारक ठीक हैं।

किन्तु यदि आप सफल सामाजिक जिंदगी जीने हेतु श्रीराम का सही संपूर्ण दर्शन करना चाहते हों, तो आप को ध्यान से वाल्मीकि रामायण ही पढ़नी होगी। इस रामायण में कहीं नहीं लिखा है कि राम ईश्वर हैं, बल्कि राम जी भी 'ओ३म्' और गायत्री मन्त्र (ओं विश्वानि देव सवितर दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आसुव) की जपोपासना, ध्यान-योग, प्राणायाम करने वाले सत्यवादी आर्यपुत्र ही थे। उनका देवी कौशल्या के गर्भ से जन्म और एक सौ ग्यारह वर्ष बाद सरयू में डूबने (जल-समाधि) से मृत्यु हुई थी। चूँकि आर्यों में किसी व्यक्ति की कृति-कीर्ति ही याद रखी जाती थी। उसकी चित्र-मूर्ति या मृत्यु-तिथि (पुण्यतिथि) नहीं मनायी जाती थी, इसीलिये राम की भी न कोई चित्रमूर्ति रही, न पुण्यतिथि का उल्लेख, सीता-हरण से काफी दुःखी होकर राम खुद ही लक्ष्मण से कहते हैं- 'भाई, पूर्वजन्म में जरूर मुझसे कोई भारी अपकर्म हुआ होगा, जो इस जन्म में पिता की मृत्यु, भाई भरत का बिछोह और सीताहरण जैसी मार्मिक-पीड़ाएँ झेलनी पड़ रही हैं।' - (३.३६.४)

वस्तुतः एक चक्रवर्ती राजपुत्र होकर भी सीता-राम का आर्योत्तम जीवन आदि से अंत तक आदर्शों का रिकॉर्ड बनाने के ही दुःखों में बीतता चला गया।

धर्म पे चल के दिखलाने में ही अपना सुख माना।

निज का सुख तजने के सिवा जो और स्वाद क्या जाना।।

बुद्ध और मुगलकालीन धर्म-संकटों से जन-सामान्य को स्वधर्म में बांधे रखने हेतु ही राम की ईश्वरीय-चमत्कारिक कथाएँ गढ़ी गयीं थीं, ताकि बुद्ध और मुहम्मद से राम और कृष्ण ही सर्वाधिक श्रेष्ठ-प्रभावी सबको लगें। किन्तु आज के कम्प्यूटर-युग में उन सब तर्कहीन बातों से अन्य धर्म के पैगम्बरों का क्या-क्या उपहास हो रहा है, ये मुझे नहीं देखना है। मुझे तो अपने राम के उज्ज्वल चरित्र पर झूठ का गंदा चोगा पहनाये रखने वाले अपने धूर्त धर्माचार्यों-पुरोहितों पर क्रोध तथा अपने धर्मांध-अंधभक्त यजमानों की मूर्खता

पर ग्लानि हो रही है। गंगा की तरह गंदे हो गये रामायण के चरित्रों की भी सफाई अब कब होगी? श्री राम की चारित्रिक मूर्ति निर्मल होते ही रामजन्म-भूमि पर ही नहीं, बाबर की भी जन्मभूमि पर भव्य रामालय बन जायेगा।

ईश्वर भक्त-राम को ईश्वर मान लेना-राष्ट्रसपूत गाँधी को राष्ट्रपिता कहने जैसा ही पाप है।

अब न कहेगा जग कि कर्ण को ईश्वरीय भी बल था।

जीता इसीलिये कि उसके पास कवच-कुंडल था।।

— (रश्मिरथी-दिनकर)

इंद्र को अपना चमत्कारी-कवच-कुंडल दं दन के

बाद जब कर्ण गर्व से ऐसा बोल सकता है, तब हमारे श्रेष्ठतम राम क्यों नहीं कह सकते—

ईश्वर कह-कह के रे पंडों। मुझे मंदिर में न बंद करो।

ले-ले मेरा नाम वंशजों। रावण-सा ना काम करो।।

युगों-युगों तक प्रेरणा देते रहने हेतु ही जीने वाला यदि मैं सचमुच सच्चा राम रहा हूँ तो मुझे ईश्वर कहलाने की झूठी बैसाखी लेकर पूजित होने की जरूरत नहीं है। मैं सदा मनुष्य ही रहा, मुझे नहीं चाहिये पापी-पाखंडियों-सां ईश्वर होने का अवैध-मुखौटा।

आर्यजगत् के समाचार

१. वेद प्रचार- परोपकारिणी सभा केसरगंज, अजमेर की प्रेरणा से नागौर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री किशनाराम आर्य (बिल्लु) व मन्त्री यशमुनि द्वारा नागौर जिला में दि. २५ जनवरी से २८ फरवरी २०१७ तक गाँव-गाँव घूमकर वेद-प्रचार करवाया गया। इसमें जिला सभा व आर्यसमाजों का विशेष सहयोग रहा। आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. भूपेन्द्र सिंह आर्य व श्री लेखराज शर्मा द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, अनेक स्थानों पर परोपकारिणी सभा से स्वामी सोमानन्द जी का सहयोग भी रहा। कार्यक्रम के अन्तर्गत साहित्य वितरण भी किया गया व कई लोगों को नशे छुड़ाने का संकल्प भी दिलाया गया।

२. व्याख्यानों की डीवीडी वितरित- टंकारा बोधोत्सव पर दिनांक २३ से २५ फरवरी २०१७ को ऋषि मिशन न्यास परिवार, भीलवाड़ा की ओर से परोपकारिणी सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य डॉ. धर्मवीर जी की वेद-विज्ञान पर आधारित वेदों के मुख्य-मुख्य सुक्तों के व्याख्यानों की १८०० डीवीडी व भरतपुर वाल्मीकि समाज समरसता यज्ञ के सुअवसर पर भी ३५० डीवीडी निःशुल्क वितरित की गई।

३. यज्ञ प्रशिक्षण कार्यशाला- आरसीए कन्या महाविद्यालय, मथुरा में सांस्कृतिक विरासत सप्ताह के अन्तर्गत यज्ञ-प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को यज्ञ का प्रशिक्षण मुख्य अतिथि एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान चला रहीं आर्योपदेशिका

बहिर्ने डॉ. अर्चना प्रिय आर्य व वन्दना प्रिय आर्य ने दिया।

४. शिविर- सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में वार्षिक शिविर २०१७, भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय रेवाड़ी में दि. २८ मई से ४ जून २०१७ तक लगाया जायेगा। वीरांगनाओं को वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान, व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण शिविर में भेजने के लिए सम्पर्क करें- ०९८१०७०२७६०, ०९९१०२३४५९५

५. बोधोत्सव मनाया- आर्यसमाज खलासी लाइन, सरदार पटेल मार्ग, सहारनपुर के प्रांगण में यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य यजमान डॉ. राजवीर वर्मा सपत्नीक एवं प्रधान श्री विजय कुमार गुप्ता रहे। यज्ञ वैदिक विद्वान् प्रियव्रत शास्त्री जी के पौरोहित्य में हुआ। यज्ञीय प्रार्थना के उपरान्त वैदिक भजनोपदेशक श्री अमरेश आर्य ग्राम चन्देना ने भजनों के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय किया।

६. शुभारम्भ- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद में पूज्य आचार्य सत्यसिन्धु आर्य (प्रधानाचार्य गुरुकुल) के जन्मोत्सव स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर दि. १० जून २०१७ से उपदेशक-महाविद्यालय/विभाग का शुभारम्भ किया जा रहा है।

उद्देश्य व नियमावली- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आर्यजगत् के लिए उपदेशक व प्रचारक तैयार करना है। पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम दशमी कक्षा उत्तीर्ण, कम से कम १८ वर्ष के स्वस्थ लग्नशील चरित्रवान् युवा

अपेक्षित हैं। यह पाठ्यक्रम त्रिवर्षीय है। इसमें निम्न उपाधियाँ प्रदान की जायेंगी- १. सिद्धान्तप्रवेशकः, २. सिद्धान्ताधिकारी, ३. सिद्धान्तभास्कर, ४. सिद्धान्तप्रभाकर, ५. सिद्धान्तवाचस्पति, ६. सिद्धान्तमार्तण्ड। प्रत्येक छः-छः मास में लिखित व मौखिक परीक्षा लेकर क्रमशः उपरोक्त उपाधियों में से एक प्रमाण पत्र सहित प्रदान की जायेगी।

सम्पर्क सूत्र- ०६४२४४७१२८८, ०९९०७०५६७२६

७. बोधोत्सव सम्पन्न- केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर द्वारा ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य महासम्मेलन २६ फरवरी २०१७ को प्रधान श्री दर्शन कुमार की अध्यक्षता में आर्यसमाज शक्तिनगर, अमृतसर के प्रांगण में उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से दयानन्द मठ दीनानगर से पधारे ब्रह्मचारियों ने करवाया।

८. जन्मोत्सव मनाया- दि. २१ फरवरी २०१७ तदानुसार फाल्गुन बदी दशमी विक्रम सम्वत् २०७३ को आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर के सभागार में महर्षि दयानन्द सरस्वती के १९३वें जन्मदिवस पर वेदमन्त्रों से देवयज्ञ सम्पन्न हुआ। उपस्थित स्त्री-पुरुषों ने यज्ञ में आहुति प्रदान की व महर्षि की राष्ट्र के लिए की गई उत्कृष्ट सेवाओं को याद किया।

९. वार्षिकोत्सव- आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर का ४८वाँ वार्षिकोत्सव दि. १३ से १६ अप्रैल २०१७ सौल्लस मनाया जायेगा, जिसमें भव्य शोभायात्रा, नगर कीर्तन का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर आचार्य हरिप्रकाश शास्त्री गुरुकुल-वृन्दावन मथुरा, आचार्य रामप्रसाद-कानपुर देहात, भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या-दिल्ली, भजनोपदेशक श्री रामसेवक आर्य-हमीरपुर तथा अन्य अनेक विद्वान्, उपदेशक, संन्यासी पधार रहे हैं।

१०. योग शिविर- पातञ्जल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार में श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में दि. ६ से १२ अप्रैल २०१७ तक ६१वाँ ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यम-नियमादि का पालन भी कराया जायेगा। सम्पर्क सूत्र- ०९८९७८०४१३३

११. महायज्ञ सम्पन्न- स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के ११७वें जन्मदिन की स्मृति में दयानन्द मठ घण्डरा, तहसील इन्दौरा, जि. कांगड़ा, हि.प्र. में यजुर्वेद से महायज्ञ तथा सत्संग का आयोजन २५ से २६ मार्च २०१७ तक स्वामी सदानन्द सरस्वती- अध्यक्ष दयानन्द मठ घण्डरा की अध्यक्षता में किया गया।

१२. प्रवेश प्रारम्भ- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। नये सत्र के प्रवेश ०१ अप्रैल २०१७ से प्रारम्भ हो रहे हैं। यहाँ पर मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएँ उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। सम्पर्क सूत्र- ०९४११४८१६२४, ०९९९७०४७६८०

१३. शिविर- सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर दि. २८ मई से ०४ जून २०१७ को भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल (रिवाड़ी) महाविद्यालय, गाँव जसात, तह. पटौदी, गुड़गाँव में आयोजित किया जा रहा है। सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों व गुरुकुलों में जहाँ वीरांगना दल की शाखायें लगती हैं, से प्रार्थना है कि वे अपनी चुनी हुई वीरांगनाओं को इस शिविर में भेजें। सम्पर्क सूत्र- ०९८१०७०२७६०

१४. शोक समाचार- दि. १२ मार्च २०१७ को श्री प्रतापसिंह राव, प्रधान-नगर आर्यसमाज, अजमेर के बड़े भ्राता श्री रामजीलाल राव के आकस्मिक देहावसान पर परोपकारिणी सभा एवं नगर आर्यसमाज के सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारी खेद प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके परिवार को इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।



वाल्मीकि समाज के लोग यज्ञ करते हुए



सामाजिक समरसता के अन्तर्गत सहभोज कार्यक्रम



वाल्मीकि समाज के महन्त आचार्य अरुणानन्द जी को यज्ञोपवीत
प्रदान करते सभा के मंत्री श्री ओममुनि जी



गंगापुरसिटी से समरसता-यज्ञ में सम्मिलित हुए श्री गोपाल धामनिया जी का ओ३म् पट्टिका द्वारा
स्वागत करते सभा के मंत्री श्री ओममनि जी

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१